देश दर्पण संवाद

— राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक — *हम खबर नहीं, आईना दिखाते हैं*

अपने लेख या सुझाव भेजने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें

इंदौर, मध्य प्रदेश सोमवार 26 अक्टूबर 2026, कृष्ण पक्ष प्रतिपदा, विक्रम संवत 2083, वर्ष - 1, अंक - 07, पृष्ठ - 8 , मूल्य - रु 2

खराखरा

18 कैरेट : ₹107,180
22 कैरेट : ₹130,990
24 कैरेट : ₹142,900

सकारात्मक सोमवारसर:

प्रिय पाठकों,
सप्रेम नमस्कार!
शुभ सोमवार!
आज 'देश दर्पण संवाद' का यह सातवां अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। आपके निरंतर प्रेम, स्नेह व विश्वास ने हमारे संकल्प को और अधिक मजबूत किया है, जिसके लिए हम हृदय से आभारी हैं।

सकारात्मकता और सौहार्द के इस पावन अवसर पर आप सभी को दीपावली की अग्रिम शुभकामनाएं। यह प्रकाश पर्व आपके जीवन में अपार सुख, शांति और समृद्धि लेकर आए!

त्योहारी सीजन में पीएम मोदी का मंत्र: 'वोकल फॉर लोकल' से रोशन हों स्थानीय कारीगरों के घर

नई दिल्ली। दीपोत्सव और आगामी त्योहारों के उल्लास के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से एक बार फिर स्वदेशी को अपनाने की पुरजोर अपील की है।

अपने बहुचर्चित मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 139वें एपिसोड को संबोधित करते हुए पीएम ने कहा कि त्योहारी खरीदारी करते समय हमें 'वोकल फॉर लोकल' के संकल्प को जरूर याद रखना चाहिए।

खास बात यह है कि ठीक 12 वर्ष पूर्व विजयादशमी के ही पावन अवसर पर इस जन-संवाद कार्यक्रम का आगाज हुआ था। 12 साल के इस लंबे सफर को प्रधानमंत्री ने देशवासियों की भावनाओं को गहराई से समझने की एक 'पवित्र तीर्थ यात्रा' की संज्ञा दी है।

स्थानीय कारीगरों को मिले आर्थिक संबल

त्योहारों की रौनक तब और बढ़ जाती है जब समाज के हर वर्ग के चेहरे पर उल्लास हो। इसी भाव को दोहराते हुए प्रधानमंत्री ने आग्रह किया कि लोग प्लास्टर ऑफ पेरिस (पीओपी) से बनी चीजों का मोह त्याग कर मिट्टी से बनी मूर्तियां और सजावटी सामग्री खरीदें।

हमारे आस-पास के स्थानीय कुम्हार और शिल्पकार पूरी शिद्दत से इन त्योहारों का इंतजार करते हैं। हमारी छोटी सी स्वदेशी खरीदारी उनके घरों में खुशियों के बड़े दीप जला सकती है।

इसके अलावा, यह कदम प्रकृति और पर्यावरण के भी पूरी तरह अनुकूल है।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय उत्पादों की गूंज

स्वदेशी उत्पाद अब केवल देश की भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि वैश्विक पटल पर भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। पीएम मोदी ने इस बात पर गर्व जताया कि भारत के छोटे शहरों और ग्रामीण अंचलों से निकले कृषि और पारंपरिक उत्पाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पसंद किए जा रहे हैं।

उन्होंने सफलता का एक शानदार उदाहरण देते हुए बताया कि बिहार के पूर्णिया जिले का मखाना अब यूरोपीय देश ग्रीस तक निर्यात किया जा रहा है।

इसी तरह कर्नाटक के कलबुर्गी की अरहर दाल भी अब मालदीव पहुंच रही है। यह सफलता इस बात का प्रमाण है कि जब स्थानीय उत्पादों को सही अवसर और प्रोत्साहन मिलता है, तो वे पूरी दुनिया में अपनी धाक जमा सकते हैं।

जन-भागीदारी से बदलाव का संदेश

कार्यक्रम के जरिए प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि 'मन की बात' ने हमेशा समाज की सकारात्मक और प्रेरक कहानियों को देश के सामने रखा है। इस दीवाली देशवासी एक बार फिर अपनी एकजुटता दिखाते हुए स्वदेशी उत्पादों को ही प्राथमिकता दें, ताकि त्योहारों की असली समृद्धि और खुशी देश के हर कोने और हर मेहनतकश कारीगर के घर तक पहुंच सके।



पत्रकारिता के उच्च मापदंडों पर खरे उतरने के लिए बप्पा हमें विवेक और शक्ति प्रदान करें, यही हमारी मंगलकामना है। सत्य को सामने लाने की 'देश दर्पण संवाद' की इस नई यात्रा में सुधी पाठकों का स्नेह, समर्थन और विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी बनेगा।

देश दर्पण संवाद — हम ख़बर नहीं, आईना दिखाते हैं

मप्र राज्यसभा उपचुनाव 12 नवंबर को मतदान, दिल्ली से तय होगा भाजपा उम्मीदवार

भोपाल। निर्वाचन आयोग ने मध्य प्रदेश की एक रिक्त राज्यसभा सीट के लिए उपचुनाव का कार्यक्रम जारी कर दिया है। इस सीट के लिए 12 नवंबर को सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक मतदान होगा और उसी दिन शाम 5 बजे मतगणना की जाएगी। चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया 26 अक्टूबर से शुरू होकर 2 नवंबर तक चलेगी।

यह राज्यसभा सीट पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन के इस्तीफे के कारण खाली हुई है। इस उपचुनाव में चुने जाने वाले नए सदस्य का कार्यकाल 2 अप्रैल 2030 तक रहेगा।

उम्मीदवार के नाम पर दिल्ली से लगेगी मुहर

इस सीट के लिए भाजपा का प्रत्याशी कौन होगा, इसका अंतिम फैसला दिल्ली से तय किया जाएगा। फिलहाल राजनीतिक गलियारों में कई नामों की चर्चा जोरों पर है।

संभावित उम्मीदवारों की दौड़ में पूर्व आईएएस एसके संधू, केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, तमिलनाडु की पूर्व विधायक वानिती श्रीनिवासन और मध्य प्रदेश के पूर्व मंत्री अरविंद भदौरिया के नाम शामिल हैं।

गौरतलब है कि एसके संधू पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के प्रधान सचिव रह चुके हैं, जबकि केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी का मौजूदा राज्यसभा कार्यकाल 25 नवंबर को समाप्त होने जा रहा है।



राज्यसभा की घोषणा होते ही दिल्ली में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष से मिले हेमंत खंडेलवाल

जनसंघ के 75 वर्ष: संघर्ष से शिखर तक का सफर

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने जनसंघ के 75वें स्थापना दिवस के अवसर पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए पार्टी की ऐतिहासिक यात्रा को याद किया। उन्होंने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा रोपा गया 'राष्ट्र प्रथम' का छोटा सा बीज आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है, और इसी का परिणाम है कि भाजपा आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है।

वैचारिक संघर्ष और राष्ट्रवाद की नींव:

अपने संबोधन में नवीन ने आजादी के बाद के शुरुआती दौर का स्मरण करते हुए बताया कि जब तत्कालीन सत्ता पश्चिमी और वामपंथी विचारधाराओं से प्रभावित होकर अपने मूल मार्ग से भटक रही थी, तब जनसंघ ने ही राष्ट्रवादी हितों की रक्षा की थी। जनसंघ ने गोवा मुक्ति संग्राम और बंगाल के हितों के लिए पुरजोर तरीके से अपनी आवाज बुलंद की थी।

3 सीटों से लगातार तीसरी बार पूर्ण बहुमत तक का सफर:

पार्टी की अभूतपूर्व राजनीतिक सफलता का जिक्र करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि पार्टी ने कभी महज 3 सीटों के छोटे से आंकड़े से अपनी यात्रा शुरू की थी। आज उसी अथक संघर्ष और कार्यकर्ताओं के समर्पण का परिणाम है कि पार्टी ने देश में लगातार तीसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई है।

नारों से धरातल तक: अंत्योदय का संकल्प:

पहले की सरकारों की नीतियों पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि पूर्व में केवल 'गरीबी हटाओ' के नारे दिए जाते थे। लेकिन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'अंत्योदय' (समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान) की सोच को वास्तविकता में धरातल पर उतारा गया है। अब सरकारी योजनाओं का लाभ पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक सफलतापूर्वक पहुंच रहा है।



ई-मुद्रा के 8 सुरक्षा कोड लीक, सरकारी साइटों पर खतरा?

नई दिल्ली- देश की सरकारी वेबसाइटों की साइबर सुरक्षा को लेकर एक बड़ी चिंता सामने आई है। बेंगलुरु स्थित कंपनी 'ई-मुद्रा' के 8 गोपनीय डिजिटल सुरक्षा कोड उजागर हो गए हैं। गौरतलब है कि ई-मुद्रा की सेवाओं का उपयोग कई सरकारी विभागों और सार्वजनिक कंपनियों द्वारा किया जाता है।

क्या था खतरा?

कंपनी के अनुसार, यह तकनीकी खामी अप्रैल 2025 में हुई एक गलती के कारण उत्पन्न हुई थी। इन लीक हुए कोड्स का फायदा उठाकर साइबर अपराधी नकली वेबसाइट्स को बिल्कुल असली जैसा दिखा सकते थे। इससे आम जनता की निजी जानकारी और पैसे चोरी होने का गंभीर खतरा बन गया था।

तत्काल कार्रवाई और बचाव

मामला 17 अक्टूबर को सामने आते ही गूगल और मोजिला जैसी प्रमुख कंपनियों ने तुरंत प्रभावित प्रमाणपत्रों को ब्लॉक कर दिया। वहीं, केंद्र सरकार भी तुरंत हरकत में आ गई। केंद्रीय आईटी मंत्रालय ने बुधवार को इस पूरे मामले की जांच के लिए एक टीम का गठन कर दिया है। ई-मुद्रा ने भी सुरक्षा कदम उठाते हुए सभी प्रभावित प्रमाणपत्रों को रद्द कर दिया है।

राहत की खबर

सरकार ने देशवासियों को आश्वस्त किया है कि भारतीय सेवाएं पूरी तरह सुरक्षित हैं और देश में डिजिटल हस्ताक्षर तथा ई-साइन सेवाओं पर इसका बेहद कम असर पड़ा है। हालांकि, यूआईडीएआई (UIDAI) और आयकर विभाग जैसे बड़े संस्थान भी ई-मुद्रा की तकनीक का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन अब तक उनकी वेबसाइटों के इस लीक से प्रभावित होने की कोई पुष्टि नहीं हुई है।



दीपोत्सव से पूर्व 14 हजार सस्ता हुआ स्वर्ण, 9 माह में आधी रह गई चांदी

इंदौर। दीपोत्सव और धनत्रयोदशी (धनतेरस) के पावन पर्व की आहट के बीच सर्राफा बाजार से आम उपभोक्ताओं के लिए एक अत्यंत उत्साहजनक समाचार सामने आया है। स्वर्ण और रजत (चांदी) के मूल्यों में अप्रत्याशित रूप से ऐतिहासिक गिरावट दर्ज की गई है।

बाजार के अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, स्वर्ण अपने उच्चतम स्तर से लगभग चौदह हजार रुपये प्रति दस ग्राम तक सस्ता हो चुका है। वहीं, रजत की कीमतों में भी बीते नौ महीनों के दौरान लगभग पचास प्रतिशत की भारी कमी परिलक्षित हुई है।

इस तीव्र गिरावट ने त्योहारी बेला में आभूषण क्रय करने की योजना बना रहे परिवारों के समक्ष एक बड़ा प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है— क्या मूल्य अभी और गिरेंगे? क्या यह खरीदारी का सर्वोत्कृष्ट समय है, या अभी और प्रतीक्षा करनी चाहिए? 'देश दर्पण संवाद' के इस विशेष आर्थिक विश्लेषण में आइए समझते हैं बाजार का वर्तमान परिदृश्य।

गिरावट के मुख्य कारक

मूल्यों में इस भारी गिरावट के पीछे मुख्य रूप से वैश्विक अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय भू-राजनीतिक परिस्थितियां उत्तरदायी हैं। प्रमुख देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा विगत कुछ समय में ब्याज दरों में किए गए निरंतर परिवर्तन ने स्वर्ण के सुरक्षित निवेश वाले आकर्षण को कुछ हद तक सीमित किया है।

इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विदेशी मुद्राओं की विनिमय दर में होने वाले उतार-चढ़ाव ने भी सर्राफा बाजार को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। वैश्विक निवेशकों का रुझान अब अन्य लाभदायक विकल्पों की ओर मुड़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप बहुमूल्य धातुओं के मूल्यों पर भारी दबाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

क्या और घटेगा स्वर्ण का मूल्य?

अर्थव्यवस्था और जिंस बाजार के विश्लेषकों का अनुमान है कि वर्तमान में सर्राफा बाजार में अस्थिरता का यह दौर आगामी कुछ सप्ताहों तक जारी रह सकता है।

यदि वैश्विक स्तर पर मुद्रास्फीति अनियंत्रित रहती है और केंद्रीय बैंक अपनी मौद्रिक नीतियों में और सख्ती अपनाते हैं, तो स्वर्ण के मूल्यों में आगामी दिनों में और भी नरमी देखने को मिल सकती है।

हालांकि, किसी भी अप्रत्याशित अंतरराष्ट्रीय संकट या भू-राजनीतिक तनाव की स्थिति में स्वर्ण पुन: सुरक्षित निवेश के रूप में उभर सकता है, जिससे मूल्यों में त्वरित उछाल आने की संभावना को पूर्णत: नकारा नहीं जा सकता।

अभी खरीदें या करें प्रतीक्षा?

बाजार विशेषज्ञों का स्पष्ट मत है कि यदि उपभोक्ता आगामी वैवाहिक समारोहों या अत्यंत आवश्यक प्रयोजनों के लिए आभूषण क्रय करने के इच्छुक हैं, तो वर्तमान गिरावट एक उत्तम अवसर सिद्ध हो सकती है।

किंतु यदि उद्देश्य केवल निवेश है, तो संपूर्ण पूंजी एकमुश्त लगाने के स्थान पर बाजार के रुझानों पर सूक्ष्म दृष्टि बनाए रखना तथा क्रमिक रूप से (चरणबद्ध तरीके से) निवेश करना अधिक श्रेयस्कर और सुरक्षित होगा।

स्वर्ण क्रय करते समय रखें ये आवश्यक सावधानियां:

प्रमाणिकता की जांच: सदैव भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) द्वारा प्रमाणित मानक चिह्न (हॉलमार्क) अंकित स्वर्ण ही क्रय करें।

मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन: आभूषण क्रय करने से पूर्व विभिन्न विश्वसनीय स्वर्णकारों के यहां स्वर्ण के मूल भाव, निर्माण शुल्क (मेकिंग चार्ज) तथा लागू करों की विस्तार से तुलना अवश्य करें।

शुद्धता का यथार्थ ज्ञान: चौबीस, बाईस और अठारह कैरेट के मूल्यों में स्पष्ट अंतर होता है, अत: अपनी आवश्यकतानुसार शुद्धता सुनिश्चित कर ही क्रय का अंतिम निर्णय लें।

त्योहारी उल्लास के मध्य बाजार का यह उतार-चढ़ाव उपभोक्ताओं के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकता है, बशर्ते वे पूर्ण जागरूकता, सतर्कता और विवेक के साथ अपनी गाढ़ी कमाई का सदुपयोग करें।



इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम हस्ताक्षर: एशियन पैरा गेम्स में 114 पदकों के साथ भारत का डंका, पदक तालिका में रहा चौथे स्थान पर

नई दिल्ली। एशियन पैरा गेम्स का समापन भारतीय खेल जगत के लिए एक ऐतिहासिक और गर्व से भरा अध्याय बन गया है।

खेलों की शानदार क्लोजिंग सेरेमनी में जब स्टार पैरा-एथलीट निशाद कुमार और मोना अग्रवाल ने शान से तिरंगा थामा, तो वह पल पूरे देश के लिए असीम गौरव का क्षण था। भारतीय जांबाजों ने अपनी शारीरिक चुनौतियों को बौना साबित करते हुए अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प का ऐसा परिचय दिया है, जिसे दुनिया लंबे समय तक याद रखेगी।

इस महाकुंभ में भारत ने अब तक का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए कुल 114 पदक अपनी झोली में डाले हैं। इस ऐतिहासिक पदक संख्या के साथ भारत ने मेडल टैली (पदक तालिका) में चौथा स्थान हासिल कर वैश्विक मंच पर अपना दबदबा कायम किया है।

यह आंकड़ा महज पदकों की संख्या नहीं है, बल्कि उन खिलाड़ियों के खून-पसीने, अटूट संघर्ष और कभी हार न मानने वाले जज्बे की जीती-जागती कहानी है।

भारतीय दल का यह सफर प्रेरणादायक रहा है। ट्रैक से लेकर फील्ड तक, हर स्पर्धा में हमारे एथलीट्स ने अपने पिछले रिकॉर्ड ध्वस्त किए और नए कीर्तिमान स्थापित किए। 114 पदकों का यह जादुई आंकड़ा इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि भारत अब पैरा स्पोर्ट्स में एक मजबूत वैश्विक शक्ति के रूप में उभर चुका है।

समापन समारोह में निशाद और मोना के हाथों में लहराता तिरंगा सिर्फ एक खेल आयोजन के खत्म होने का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह भारतीय खेलों के एक नए, उज्ज्वल और स्वर्णिम युग की शुरुआत का शंखनाद था।

हमारे इन जांबाज खिलाड़ियों की यह अभूतपूर्व सफलता आने वाली कई पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।



एमपी सरकार का 268 करोड़ का नया विमान भोपाल पहुंचा, पर मुख्यमंत्री की उड़ान में अभी 45 दिन बाकी



भोपाल: मध्य प्रदेश सरकार का नया और बेहद एडवांस विमान **'बॉम्बार्डियर चैलेंजर 3500'** आखिरकार भोपाल के स्टेट हैंगर पर पहुंच गया है।

हालांकि, मुख्यमंत्री और अन्य वीवीआईपी को इस आलीशान विमान में सफर करने के लिए अभी करीब डेढ़ महीने यानी 45 दिन का इंतज़ार करना होगा।

साल 2021 में पुराना सरकारी विमान क्रैश होने के बाद से राज्य सरकार अब तक किराए के प्राइवेट विमानों से काम चला रही थी, जिसका भारी बिल चुकाना पड़ रहा था। अब इस नए विमान के आने से यह कमी पूरी हो गई है।

विमान भोपाल तो आ गया है लेकिन अभी इसका उड़ान भरना संभव नहीं है क्योंकि इसके कई कागजी काम पूरे होने बाकी हैं।

दिल्ली में कस्टम क्लीयरेंस और नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) से जुड़ी कई जरूरी मंजूरियां अभी ली जानी हैं। इसके अलावा 268 करोड़ रुपये के इस भारी-भरकम विमान का इंश्योरेंस भी होना है, जिसका हर साल का प्रीमियम ही करीब दो करोड़ रुपये होगा। इन सब कानूनी और कागजी प्रक्रियाओं को पूरा होने में लगभग 45 दिन का समय लग जाएगा, जिसके बाद ही मुख्यमंत्री इसमें सफर कर सकेंगे।

इस विमान की खासियतें किसी उड़ते हुए फाइव स्टार होटल जैसी हैं। इसमें जीरो ग्रेविटी वाली सीटें लगी हैं और पूरा केबिन आपकी आवाज से कंट्रोल होता है।

यह प्लेन इतना दमदार है कि एक बार टैंक फुल होने पर यह भोपाल से सीधे जापान तक बिना रुके जा सकता है। यह 45 हजार फीट की ऊंचाई पर उड़ने की ताकत रखता है जिससे खराब मौसम का इस पर ज्यादा असर नहीं होता।

एक और दिलचस्प बात यह है कि हमारे मध्य प्रदेश के दो पायलटों ने इसे उड़ाने की ट्रेनिंग विदेश में ली है, लेकिन सुरक्षा नियमों के कारण पहले एक साल तक इस विमान की कमान इसे बनाने वाली कंपनी के ही एक विदेशी पायलट के हाथों में रहेगी। अपने दोनों पायलट अभी उनके साथ बतौर को-पायलट ही उड़ान भरेंगे।

कॉलेजों में बनेंगी एंटी-ड्रग कमेटियां, सरकार का तीन वर्षीय मास्टरप्लान तैयार।

नक्सलवाद की तर्ज पर मध्य प्रदेश से होगा नशे का सफाया



भोपाल: मध्य प्रदेश को नशामुक्त बनाने और अवैध मादक पदार्थों के नेटवर्क को पूरी तरह ध्वस्त करने के लिए राज्य सरकार ने नक्सलवाद उन्मूलन की तर्ज पर एक सख्त त्रि-वर्षीय कार्ययोजना तैयार की है। मुख्य सचिव अशोक बर्णवाल की अध्यक्षता में हुई पांचवीं राज्य स्तरीय एनसीओआरडी (NCORD) की बैठक में इस दिशा में कई कड़े और अहम फैसले लिए गए हैं।

शिक्षण संस्थानों में विशेष निगरानी और 'एंटी-ड्रग कमेटी'

युवाओं को नशे की गिरफ्त से बचाने के लिए 500 से अधिक विद्यार्थियों वाले सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में 'एंटी-ड्रग कमेटी' का गठन किया जाएगा।

इन समितियों में शिक्षक, अभिभावक, विद्यार्थी, उच्च शिक्षा व सामाजिक न्याय विभाग और पुलिस के प्रतिनिधि शामिल होंगे।

समिति का नोडल अधिकारी स्थानीय थाने के बीट इंचार्ज को बनाया जाएगा।

स्कूलों में भी 'नशामुक्त विद्यालय अभियान' चलाया जाएगा और गुप्त सूचना देने वाले विद्यार्थियों व शिक्षकों की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी।

कोडिन कफ सिरप और केमिकल फैक्ट्रियों पर सख्ती

नशे के रूप में इस्तेमाल होने वाले कोडिन बेस्ड कफ सिरप के उत्पादन और वितरण पर केंद्र सरकार के समन्वय से सख्त निगरानी रखी जाएगी। इसके लिए पूरी लाइसेंस प्रक्रिया और आपूर्ति तंत्र को कंप्यूटराइज्ड किया जाएगा।

साथ ही, केमिकल फैक्ट्रियों में उपयोग होने वाले रसायनों (प्रीकर्सर) के अवैध डायवर्जन को रोकने के लिए उद्योग, श्रम, स्वास्थ्य और गृह विभाग संयुक्त रूप से निगरानी तंत्र विकसित करेंगे।

कार्रवाई के कड़े आंकड़े और आगामी लक्ष्य

राज्य में ड्रग नेटवर्क के खिलाफ लगातार बड़ी कार्रवाइयां हो रही हैं:

वर्ष 2025-2026 में 811 शिकायतों पर कार्रवाई करते हुए पुलिस और अन्य एजेंसियों ने 18 गुप्त मादक पदार्थ प्रयोगशालाओं को ध्वस्त किया है।

एनडीपीएस (NDPS) एक्ट के तहत ड्रग तस्करों की संपत्तियों पर बड़ा प्रहार किया गया है; वर्ष 2025 में 300 करोड़ रुपये और 2026 में 146 करोड़ रुपये की संपत्ति अटैच की गई है।

मादक पदार्थों की सूचना देने के लिए राष्ट्रीय नारकोटिक्स हेल्पलाइन 'मानस पोर्टल' 1933 का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

मुख्य सचिव ने एफएसएल (FSL) को एनडीपीएस सैंपलों की जांच रिपोर्ट 15 दिन में सौंपने के निर्देश दिए हैं।

इसके अतिरिक्त, सामाजिक न्याय विभाग को 31 अक्टूबर तक प्रदेश के सभी जिलों में नशामुक्ति केंद्र स्थापित करने का लक्ष्य दिया गया है। वर्तमान में राज्य में कुल 41 नशामुक्ति केंद्र संचालित हैं।

अस्पतालों में वेतन घोटाला: हक 13,571 का, मिल रहे सिर्फ 5,500

भोपाल: मध्यप्रदेश के सरकारी अस्पतालों में मरीजों की सेवा करने वाले आउटसोर्स स्वास्थ्य कर्मचारियों के वेतन में भारी गड़बड़ी का मामला सामने आया है। साल 2019 से 2026 के बीच प्रदेश के 20 जिलों में आउटसोर्स कर्मचारियों को हर महीने निर्धारित वेतन से काफी कम राशि दी जा रही है।

कर्मचारी संघ के अनुसार, शासन द्वारा अर्द्धकुशल श्रमिकों के लिए 13,571 रुपये का वेतन निर्धारित किया गया है, लेकिन एजेंसियों द्वारा कर्मचारियों को मात्र 5,500 से 11,000 रुपये तक ही दिए जा रहे हैं। यानी हर महीने कर्मचारियों को 8 हजार रुपये तक का नुकसान हो रहा है।

हर जिले में अलग-अलग वेतन:

वेतन में भारी असमानता देखने को मिल रही है। जहां कटनी में कर्मचारियों को 5500 से 6500 रुपये मिल रहे हैं, वहीं उज्जैन में 7650 और सागर में 8000 रुपये दिए जा रहे हैं। राजधानी भोपाल में भी हालात अलग नहीं हैं; यहां काटजू अस्पताल में राज सिक्योरिटी फोर्स के कर्मियों को 9 हजार तो जेपी अस्पताल में 10,840 रुपये दिए जा रहे हैं।

ईपीएफ में भी फर्जीवाड़े की आशंका:

मध्यप्रदेश संविदा आउटसोर्स स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के अध्यक्ष कोमल सिंह ने वेतन के साथ-साथ ईपीएफ (EPF) में भी अनियमितताओं का आरोप लगाया है। संघ ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल को शिकायत सौंपकर पूरे मामले की सीबीआई (CBI) जांच की मांग की है।

2500 से शुरू होकर 18 हजार तक पहुंची संख्या:

गौरतलब है कि 13 अगस्त 2019 को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के जरिए 2500 सपोर्ट स्टाफ को आउटसोर्स पर रखा गया था। इसके बाद 2024-25 में स्वास्थ्य विभाग ने 18 हजार मल्टी टास्क वर्कर (एमटीएस) नियुक्त किए, जो प्रदेश भर के विभिन्न स्वास्थ्य केंद्रों में तैनात हैं।

अस्पताल वेतन घोटाला

"हक ₹13,571, मिल रहे सिर्फ ₹5.5K से ₹11K"

मामला: सरकारी अस्पतालों में आउटसोर्स कर्मचारियों का वेतन व ईपीएफ घोटाला

नुकसान: ₹8,000/माह तक

मांग: सीबीआई (CBI) जांच (वीय (संघ द्वारा)

वेतन असमानता

जिला/अस्पताल	वेतन (₹)
कटनी	5,500 - 6,500
उज्जैन	7,650
सागर	8,000
भोपाल (काटजू)	9,000
भोपाल (जेपी)	10,840

कर्मचारियों की संख्या

- **2019:** 2,500 सपोर्ट स्टाफ (NHM)
- **2024-25:** 18,000 मल्टी टास्क वर्कर (MTS)

विजयादशमी के पावन अवसर पर मड़वास गढ़ी में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ गद्दी और शस्त्र पूजन कार्यक्रम आयोजित

● रवि शुक्ला

सीधी। विजयादशमी के पावन अवसर पर मड़वास गढ़ी में पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ गद्दी एवं शस्त्र पूजन संपन्न हुआ। मड़वास के राजा अभ्युदय सिंह 'राज भैया' ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। इसके पश्चात गढ़ी में दशहरा मिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मड़वास रियासत के विभिन्न गांवों एवं अन्य जिलों सहित क्षेत्र से आए लोगों ने सहभागिता की। दशहरा मिलन समारोह के दौरान लोगों ने राजा अभ्युदय सिंह को विजयादशमी की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर क्षेत्र से पहुंचे लोगों ने शाल एवं श्रीफल भेंट कर उनका सम्मान किया।

गढ़ी में पूरे दिन पारंपरिक उत्सव और मेल-मिलाप का माहौल बना रहा। लोगों ने एक-दूसरे को पर्व की शुभकामनाएं देते हुए आपसी सौहार्द और सामाजिक एकता का संदेश दिया।

दशहरे पर नीलकंठ दर्शन की मान्यता

दशहरा पर्व पर गढ़ी में वर्षों से चली आ रही परंपराओं का निर्वहन किया गया। मान्यता के अनुसार, विजयादशमी के दिन राजा के दर्शन और नीलकंठ पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है। समारोह में लोगों ने पारंपरिक पान और उत्सव का आनंद भी लिया। दूर-दराज के गांवों से पहुंचे लोगों ने राजा अभ्युदय सिंह से भेंट कर दशहरा पर्व की खुशियां साझा कीं।

विधायक सहित जनप्रतिनिधियों ने की मुलाकात

दशहरा मिलन समारोह में धौहनी विधानसभा क्षेत्र के विधायक कुंवर सिंह टेकाम, मझौली जनपद पंचायत अध्यक्ष सुनैना सिंह, कुसमी जनपद पंचायत अध्यक्ष श्यामवती सिंह सहित क्षेत्र एवं जिले के अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी गढ़ी पहुंचकर राजा अभ्युदय सिंह से मुलाकात की और विजयादशमी की शुभकामनाएं दीं।

मड़वास गढ़ी में आयोजित यह समारोह क्षेत्र की ऐतिहासिक परंपराओं, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक मेल-मिलाप का प्रतीक बना। समारोह में लोगों की सहभागिता ने दशहरा पर्व के पारंपरिक महत्व को रेखांकित किया।

थ्रेड्स ऑफ मध्य: हथकरघा, संस्कृति और फैशन के अनूठे संगम में स्थानीय प्रतिभाओं का हुआ सम्मान



● प्रकाश त्रिपाठी

भोपाल, देश दर्पण संवाद ।

सेलेस्टियल पार्क में 24 अक्टूबर को 'थ्रेड्स ऑफ मध्य - डिजाइनर रनवे एंड एक्सीलेंस अवॉर्ड्स' का आयोजन 'व्हेयर कल्चर मीट्स लिगेसी' थीम पर किया गया। सीमा विश्वकर्मा, खुशबू जैन एवं डॉ. चांदनी भारती द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य मध्यप्रदेश की हथकरघा परंपरा, संस्कृति और स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना रहा।

श्रमदान के सहयोग से आयोजित इस पहल में डिजाइनरों सीमा विश्वकर्मा, प्रवीण श्रीवास्तव, अनामिका मालपानी, दीक्षा साहू एवं बंटी राय ने पारंपरिक और आधुनिक फैशन का आकर्षक संगम प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री ओम जटिया तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती ममता विश्वकर्मा और सुश्री स्मृति जैन उपस्थित रहीं। आयोजन को श्री आनंद शर्मा, अधिवक्ता श्री संजय बंसल, लक्ष्मीपति के सीईओ, सुश्री प्रिया तिवारी, डॉ. जागृति अग्रवाल, महावीर ज्वेलरी, पेजेंट इंडिया कंपनी एवं श्री नवीन वर्मा का सहयोग प्राप्त हुआ।

निर्णायक मंडल में नवनीत विश्वकर्मा, अक्षय खरे, सपना गुप्ता पाटनकर, सोनू बलवाड़ा एवं चंचल सरवैया शामिल रहे।

प्रतियोगिता में मोहित चौधरी को 'मध्य का सरताज', हर्षवर्धन राठौर को 'मिस्टर मध्य सितारा', जयराज ठाकुर को 'मिस्टर रैंप सम्राट', ज़ैन को 'शान-ए-मध्य', डॉ. अंबर पारसिया को 'मध्य महाराजा' और प्रिंस द्विवेदी को 'राजकुमार-ए-मध्य' के खिताब से सम्मानित किया गया। विनीता यादव, पूनम चौबे सहित अन्य महिला मॉडल्स को भी विभिन्न खिताब प्रदान किए गए।

समारोह में डॉ. निशा अग्रवाल को मध्यप्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान तथा शिक्षिका, लेखिका एवं प्रेरक वक्ता के रूप में उत्कृष्ट कार्यों के लिए 'एक्सीलेंस अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया।

आयोजकों ने कहा कि 'थ्रेड्स ऑफ मध्य' मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विरासत, हैंडलूम और उभरती प्रतिभाओं को नई पहचान दिलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

एमपीसीए की नई पहल: 5 शहरों में खुलेंगे क्रिकेट सब-सेंटर

इंदौर, देश दर्पण संवाद । मध्य प्रदेश में क्रिकेट की नई प्रतिभाओं को तराशने और उन्हें बेहतर मंच प्रदान करने के लिए मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (एमपीसीए) एक बड़ा कदम उठाने जा रहा है। एमपीसीए द्वारा प्रदेश के पांच शहरों— इंदौर, ग्वालियर, रीवा, सागर और नर्मदापुरम (होशंगाबाद) में नए क्रिकेट सब-सेंटर शुरू किए जा रहे हैं।

इन सब-सेंटर्स में मुख्य रूप से 10 से 12 वर्ष तक के बच्चों को प्रवेश दिया जाएगा, जहां उन्हें कम उम्र में ही क्रिकेट की बुनियादी तकनीक सिखाई जाएगी। एमपीसीए अध्यक्ष महान आर्यमन सिंधिया के विशेष निर्देशों के बाद ग्वालियर में पिछले ढाई साल से बंद पड़े सब-सेंटर को भी नए स्वरूप में फिर से शुरू किया जा रहा है। ग्वालियर स्टेडियम में इसके लिए आवेदन फॉर्म भी उपलब्ध करा दिए गए हैं।

13 साल की उम्र तक पूरी होगी बेसिक ट्रेनिंग

इस पहल का लक्ष्य बच्चों को एक से तीन साल तक प्रशिक्षित करना है, ताकि 13 वर्ष की आयु पूरी होने तक उनका बुनियादी प्रशिक्षण पूरा हो सके। इसके बाद ये खिलाड़ी अपनी रुचि के अनुसार किसी भी बड़ी क्रिकेट अकादमी या स्थानीय क्लब से जुड़कर अपना भविष्य संवार सकेंगे।

भोपाल और आसपास के खिलाड़ियों को इसका लाभ देने के लिए नर्मदापुरम में भी जल्द ही क्रिकेट मैदान तैयार करने की प्रक्रिया शुरू होने वाली है।

पढ़ाई का भी रखा जाएगा ध्यान

इस पूरी योजना को इस तरह से तैयार किया गया है कि बच्चों की स्कूली पढ़ाई बिल्कुल भी प्रभावित न हो। प्रशिक्षण अलग-अलग सत्रों में होगा; सुबह के 40 मिनट के सत्र में बच्चों की शारीरिक फिटनेस और व्यायाम पर ध्यान दिया जाएगा, जबकि शाम को स्कूल की छुट्टी के बाद खेल का अभ्यास कराया जाएगा।

इस व्यवस्था में डिवीजन क्रिकेट एसोसिएशन को स्थानीय स्तर पर कोच, ट्रेनर और असिस्टेंट कोच की व्यवस्था करनी होगी, जबकि खेल सामग्री और अन्य सभी जरूरी सुविधाएं एमपीसीए द्वारा उपलब्ध कराई जाएंगी।

निश्चित रूप से इस पहल से छोटे शहरों के खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का एक शानदार अवसर मिलेगा।

भाजयुमो की राष्ट्रीय टीम घोषित, मप्र के आशीष झाला बने मंत्री



● शिवम शुक्ला

भोपाल, देश दर्पण संवाद ।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय संगठन ने युवा मोर्चा की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी और राष्ट्रीय कार्यपरिषद का ऐलान कर दिया है।

लोकसभा सांसद और भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हेमांग जोशी द्वारा घोषित इस टीम में मध्य प्रदेश के तीन युवा चेहरों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं।

वर्तमान में मप्र युवा मोर्चा के प्रदेश महामंत्री और देवास निवासी आशीष झाला को 21 सदस्यीय राष्ट्रीय टीम में मंत्री नियुक्त किया गया है। वहीं, 34 सदस्यीय राष्ट्रीय कार्यपरिषद में मध्य प्रदेश से दो युवाओं को जगह मिली है; इनमें भोपाल की भक्ति शर्मा को रिपीट किया गया है और ग्वालियर के गजेंद्र सिंह तोमर (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सचिव रहे) को नया सदस्य बनाया गया है।

यूपी-बिहार का रहा दबदबा

राष्ट्रीय कार्यकारिणी टीम में सर्वाधिक हिस्सेदारी उत्तर प्रदेश, बिहार, तेलंगाना और दिल्ली को मिली है। इन चारों राज्यों से 3-3 पदाधिकारी बनाए गए हैं।

वहीं राष्ट्रीय कार्यपरिषद में अकेले यूपी से 5 युवा नेताओं को जगह दी गई है।

कई दिग्गज दावेदार रह गए पीछे

पार्टी सूत्रों के अनुसार, मप्र से राष्ट्रीय टीम में शामिल होने के लिए पूर्व युवा मोर्चा अध्यक्ष वैभव पवार, राहुल तिवारी, अंकित गर्ग और पूर्व प्रदेशाध्यक्ष प्रभात झा के बेटे तुम्बुल झा जैसे कई नाम दावेदार माने जा रहे थे।

हालांकि, प्रदेश से सिर्फ आशीष, भक्ति और गजेंद्र को ही राष्ट्रीय स्तर पर संगठन के कार्यक्रमों और युवाओं से जुड़े मुद्दों में नई भूमिका निभाने की हरी झंडी मिल सकी है।

ऊर्जा क्षेत्र में ऐतिहासिक कीर्तिमान

ऊर्जा क्षेत्र में ऐतिहासिक कीर्तिमान: स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि

नई दिल्ली। हरित क्रांति की नई दिशा: सरकारी अनुदान के बिना सौर ऊर्जा बनी सबसे किफायती विकल्प
वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के मोर्चे पर वर्ष 2026 एक अत्यंत उत्साहजनक समाचार लेकर आया है।
नवीनतम ऊर्जा आँकड़ों के अनुसार, यह वर्ष नवीकरणीय ऊर्जा—विशेषकर सौर और पवन ऊर्जा—के क्षेत्र में अब तक का सर्वाधिक स्वर्णिम और कीर्तिमान स्थापित करने वाला वर्ष सिद्ध हो रहा है।
इस वर्ष राष्ट्रीय विद्युत वितरण प्रणाली में 45 गीगावाट की रिकॉर्ड स्वच्छ ऊर्जा क्षमता को सफलतापूर्वक जोड़ा जा रहा है।
सबसे उल्लेखनीय तथ्य यह है कि निरंतर तकनीकी नवाचारों के फलस्वरूप सौर ऊर्जा पट्टिकाएं और ऊर्जा संचयन प्रणालियां इतनी सस्ती तथा प्रतिस्पर्धी हो गई हैं कि अब वे बिना किसी सरकारी अनुदान के भी ऊर्जा का सबसे सुलभ और किफायती स्रोत बन चुकी हैं।
यह ऐतिहासिक उपलब्धि न केवल कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मील का पत्थर है, बल्कि भविष्य की सुरक्षित ऊर्जा नीतियों का भी एक नया अध्याय लिख रही है।



टाइगर श्रॉफ केस में नया मोड़: इंदौर से संदिग्ध प्रांजल हिरासत में

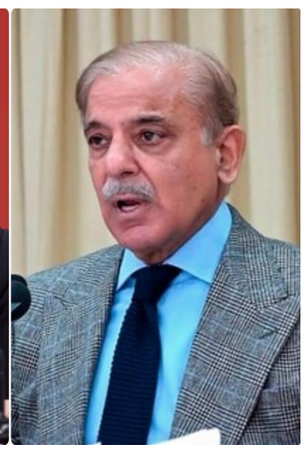


नई दिल्ली। बॉलीवुड अभिनेता टाइगर श्रॉफ पर हुए हमले के मामले में एक बड़ा अपडेट सामने आया है। इस हाई-प्रोफाइल केस की जांच अब मध्य प्रदेश के इंदौर शहर तक पहुंच गई है।
सूत्रों के अनुसार, मुंबई क्राइम ब्रांच ने इंदौर पुलिस के साथ मिलकर एक संयुक्त अभियान चलाया और बड़ी कार्रवाई की है। इस कार्रवाई के दौरान पुलिस ने इंदौर से प्रांजल नाम के एक संदिग्ध व्यक्ति को हिरासत में लिया है।
पुलिस इस मामले में हथियारों की कथित सप्लाई और हमले की पूरी योजना तैयार करने से जुड़े अहम पहलुओं की गहनता से पड़ताल कर रही है।
प्रांजल की गिरफ्तारी के बाद अब जांच एजेंसियां इस बात का पता लगाने में जुटी हैं कि आखिर इंदौर से इस हमले का क्या सीधा कनेक्शन है।
मुंबई पुलिस लगातार सबूत जुटाने में लगी है और उम्मीद जताई जा रही है कि संदिग्ध से पूछताछ के बाद इस साजिश से जुड़े कई और बड़े खुलासे हो सकते हैं।

आतंक के आकाओं पर सीधा निशाना, चीन की विस्तारवादी नीतियों और दोहरे रवैये को आईना

आतंकवाद पर भारत का कड़ा प्रहार: इशाक डार के सामने पाकिस्तान को चेतावनी, चीन को भी दिखाया आईना







नई दिल्ली: भारत ने एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय मंच से आतंकवाद और उसे पनाह देने वाले देशों के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की है। देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आतंकवाद के मुद्दे पर कड़ा रुख अपनाते हुए पाकिस्तान और चीन दोनों को स्पष्ट संदेश दिया है। एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक घटनाक्रम में, पाकिस्तान के प्रतिनिधि इशाक डार की मौजूदगी में राजनाथ सिंह ने दो टूक शब्दों में कहा कि जो देश आतंकवादियों को शरण देते हैं, उनके खिलाफ पूरी दुनिया को एकजुट होना होगा।

आतंक के आकाओं पर सीधा निशाना

रक्षा मंत्री का यह बयान इसलिए भी बेहद अहम हो जाता है क्योंकि यह पाकिस्तान के लिए एक सीधा कूटनीतिक प्रहार है। पाकिस्तान लंबे समय से अपनी जमीन का इस्तेमाल भारत विरोधी आतंकी गतिविधियों के लिए करता रहा है।
राजनाथ सिंह ने इशाक डार के सामने यह स्पष्ट कर दिया कि आतंकवाद केवल किसी एक देश की समस्या नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है।
उन्होंने जोर देकर कहा कि आतंकवाद को 'अच्छे' और 'बुरे' के चश्मे से नहीं देखा जा सकता। आतंकियों को पालने-पोसने वाले देशों को यह समझना होगा कि यह आग एक दिन उनके घर को भी खाक कर देगी।
भारत का यह दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय बिरादरी से भी अपील करता है कि वह आतंकवाद के प्रायोजकों को पूरी तरह से अलग-थलग करे।

चीन की विस्तारवादी नीतियों और दोहरे रवैये को आईना

इस कड़े बयान की आंच केवल पाकिस्तान तक ही सीमित नहीं रही; राजनाथ सिंह ने बिना नाम लिए चीन की विस्तारवादी नीतियों और आतंकवाद पर उसके दोहरे मापदंड को भी कटघरे में खड़ा किया।
यह जगजाहिर है कि जब भी संयुक्त राष्ट्र में किसी पाकिस्तानी आतंकी को वैश्विक आतंकी घोषित करने का प्रस्ताव आता है, तो चीन अपने विशेषाधिकार का इस्तेमाल कर उसमें अड़ंगा लगा देता है और आतंकियों को बचा लेता है।
रक्षा मंत्री का बयान इसी ओर इशारा करता है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में किसी भी प्रकार का दोहरा रवैया कतई बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए। साथ ही, क्षेत्रीय शांति और संप्रभुता का सम्मान करने की नसीहत देकर उन्होंने सीमा विवाद पर भी भारत का कड़ा रुख साफ कर दिया है।

शून्य सहनशीलता की नीति पर अडिग भारत

साप्ताहिक राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो राजनाथ सिंह का यह बयान केंद्र सरकार की 'शून्य सहनशीलता' (रत्ती भर भी बर्दाश्त न करने) की नीति का ही विस्तार है। भारत ने यह साफ कर दिया है कि जब तक सीमा पार से आतंकवाद बंद नहीं होता, तब तक किसी भी प्रकार की बातचीत या नरमी की कोई गुंजाइश नहीं है। भारत अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं करेगा और आतंक के आकाओं को उन्हीं की भाषा में जवाब देने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

आत्मनिर्भर भारत और रक्षा सुधारों को गति: रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह का कार्यकाल एक साल बढ़ा, अब 2027 तक संभालेंगे कमान



नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह के कार्यकाल को एक वर्ष के लिए विस्तार दे दिया है।
कैबिनेट की नियुक्ति समिति (ACC) द्वारा दी गई इस आधिकारिक मंजूरी के बाद, अब वे 31 अक्टूबर 2027 तक (या अगले आदेश तक) इस अहम पद की जिम्मेदारी संभालते रहेंगे। उनका मौजूदा कार्यकाल इसी साल 31 अक्टूबर 2026 को समाप्त होने वाला था।
इस सेवा विस्तार के साथ ही राजेश कुमार सिंह मोदी सरकार के कार्यकाल में दूसरे सबसे लंबे समय तक सेवाएं देने वाले रक्षा सचिव बन जाएंगे।
बनेगा दूसरा सबसे लंबा कार्यकाल
केरल कैडर के 1989 बैच के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी राजेश कुमार सिंह ने 1 नवंबर 2024 को गिरिधर अरमाने की जगह देश के 40वें रक्षा सचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था।
31 अक्टूबर 2027 तक पद पर बने रहने की स्थिति में उनका कुल कार्यकाल लगभग 1095 दिनों का हो जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में यह किसी भी रक्षा सचिव का दूसरा सबसे बड़ा कार्यकाल होगा।
उल्लेखनीय है कि इससे पहले डॉ. अजय कुमार ने इस सरकार में सर्वाधिक 1,166 दिनों तक इस पद की जिम्मेदारी निभाई थी।
क्यों दिया गया सेवा विस्तार?
रक्षा मामलों के जानकारों के अनुसार, राजेश कुमार सिंह को यह एक्सटेंशन मुख्य रूप से रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को नई ऊंचाइयों पर ले जाने और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) में चल रहे ढांचागत सुधारों को तेजी से लागू करने के लिए दिया गया है।
अपने मौजूदा कार्यकाल के दौरान उन्होंने रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया (DAP) को पारदर्शी और तेज बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है। उनके नेतृत्व में हथियारों के स्वदेशी उत्पादन, रक्षा निर्यात के रिकॉर्ड स्तर और मिसाइल सेक्टर में प्राइवेटाइजेशन के दरवाजे खोलने पर विशेष जोर दिया गया है।

शानदार प्रशासनिक अनुभव और अतिरिक्त प्रभार

राजेश कुमार सिंह के पास एक लंबा और बहुआयामी प्रशासनिक अनुभव है।
रक्षा मंत्रालय का जिम्मा संभालने से पहले वे उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) के साथ-साथ पशुपालन और डेयरी विभाग में भी सचिव के पद पर शानदार काम कर चुके हैं।
इसी वर्ष (मई 2026 में) समीर वी. कामत का कार्यकाल पूरा होने के बाद, केंद्र सरकार ने राजेश कुमार सिंह को रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और DRDO के अध्यक्ष का अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा था।
रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक कामकाज और सेनाओं के साथ समन्वय का नेतृत्व करने वाले राजेश कुमार सिंह का यह सेवा विस्तार इस बात का स्पष्ट संकेत है कि केंद्र सरकार देश की सुरक्षा नीतियों, रक्षा आधुनिकीकरण और सैन्य आत्मनिर्भरता की गति को निरंतर बनाए रखना चाहती है।

'अब हर गांव में बनेंगे पीएम आवास': पुरवा के जन-विश्वास शिविर में डिप्टी सीएम की सौगातें, 158 आवेदनों का त्वरित निराकरण



मनगवां, देश दर्पण संवाद । मनगवां विधानसभा के ग्राम पुरवा में शुक्रवार को 'मुख्यमंत्री जन विश्वास शिविर' का सफल आयोजन किया गया।
उप मुख्यमंत्री एवं लोक स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री राजेंद्र शुक्ल ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर इस शिविर का शुभारंभ किया। 'आपकी सरकार आपके द्वार' की तर्ज पर आयोजित इस शिविर में कुल 158 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से अधिकांश समस्याओं का मौके पर ही निराकरण कर ग्रामीण जनता को बड़ी राहत दी गई।
शिविर को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि मध्य प्रदेश सरकार की योजनाएं अंतिम छोर के व्यक्ति तक सीधे पहुंच रही हैं, जिससे आम नागरिक आत्मनिर्भर बन रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में उपलब्धियां गिनाते हुए उन्होंने बताया कि प्रदेश के प्राथमिक एवं स्वास्थ्य केंद्रों में 3 हजार बॉन्डेड डॉक्टरों की नियुक्ति की गई है।
उन्होंने मातृ एवं शिशु मृत्यु दर का मुख्य कारण एनीमिया को बताते हुए सभी से जीवन में एक बार रक्तदान करने की अपील की। इसके साथ ही उन्होंने मनगवां-रीवा बाईपास बनने से घटी दुर्घटनाओं, आयुष्मान कार्ड के जरिए मुफ्त इलाज और स्वामित्व योजना के तहत आबादी भूमि की निशुल्क रजिस्ट्री का भी उल्लेख किया। उन्होंने आश्वस्त किया कि शासन के पास धन की कोई कमी नहीं है और अब हर गांव में प्रधानमंत्री आवास बनाए जाएंगे।
मनगवां विधायक इंजीनियर नरेंद्र प्रजापति और कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने शिविर की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला। अधिकारियों ने बताया कि इस अभियान के तहत सभी विभागों के अधिकारी एक ही स्थान पर एकत्रित होकर समस्याओं का तुरंत समाधान करते हैं, साथ ही आंगनवाड़ी, स्कूल और राशन दुकानों का निरीक्षण भी किया जाता है।
कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री ने कई हितग्राहियों को सीधे लाभान्वित किया। रजनीश साकेत, मोहन साकेत और पारस सहित अन्य को पीएम आवास की चाबी सौंपी गई। वहीं कई हितग्राहियों को सामाजिक पेंशन व आयुष्मान कार्ड वितरित किए गए।
मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना के तहत युवाओं को सशक्त करते हुए अर्पित गुप्ता को 8 लाख और विवेक सिंह को 9 लाख रुपये का चेक सौंपा गया।
शिविर में 'उद्योग संवाद' भी आकर्षण का केंद्र रहा, जहां अनुपमा डेयरी के संचालक अनिल कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि उद्योग विभाग से 46 लाख रुपये का लोन लेकर उन्होंने डेयरी स्थापित की है।
आज वहां 5 हजार लीटर दूध का संग्रहण हो रहा है और 8 लोगों को रोजगार मिला है।
कार्यक्रम का समापन उप मुख्यमंत्री द्वारा सीएफटी भवन प्रांगण में मुनगा (सहजन) का पौधा रोपकर किया गया।
इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक डॉ. गुरकरण सिंह, एसडीएम संजय जैन और जनपद सीईओ प्राची चौबे सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह का कार्यकाल बढ़ा

केंद्र सरकार ने रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह का कार्यकाल एक वर्ष बढ़ाकर 31 अक्टूबर 2027 तक कर दिया है। कैबिनेट की नियुक्ति समिति (ACC) ने इस फैसले को मंजूरी दी है। केरल कैडर के 1989 बैच के आईएएस अधिकारी सिंह ने 1 नवंबर 2024 को देश के 40वें रक्षा सचिव के रूप में पदभार संभाला था। विस्तार के बाद उनका कुल कार्यकाल लगभग 1,095 दिनों का होगा। इससे पहले डॉ. अजय कुमार ने 1,166 दिनों तक इस पद पर सेवाएं दी थीं। सिंह के कार्यकाल में रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, स्वदेशी हथियार उत्पादन, रक्षा निर्यात और DRDO में सुधारों पर जोर रहा है। मई 2026 में समीर वी. कामत का कार्यकाल पूरा होने के बाद सिंह को रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और DRDO अध्यक्ष का अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा गया था।



रवि शंकर शास्त्री

2026 में क्यों सुलग रही है दुनिया ? सितारों की चाल में छिपे हैं वैश्विक उथल-पुथल के रहस्य

देश दर्पण संवाद।

आखिर 2026 इतना तनाव और संघर्षों भरा क्यों है

मित्रों जैसा कि हम सभी को विदित है कि पिछले चार-पांच वर्षों से पूरे विश्व में स्थितियां उथल-पुथल है और विशेष करके 2026 में सत्ता परिवर्तन जनता और सरकार का आपस में संघर्ष और बहुत सारे राष्ट्रों का आपस में युद्ध देखने को मिल रहा है।

आइए ज्योतिष की दृष्टि से जानते हैं कि इसके क्या कारण है और आने वाले समय में क्या स्थितियां निर्मित हो रही है।

रौद्र नामक संवत्सर का प्रभाव

हिंदू पंचांग के अनुसार, हिंदू नववर्ष की शुरुआत रौद्र संवत्सर के प्रभाव में हुई है।

नाम के अनुरूप ही इस संवत्सर का स्वभाव उग्र, आक्रामक और विनाशकारी माना जाता है। इसके प्रभाव से वैश्विक नेताओं में कूटनीतिक समझ की कमी आती है और अहंकार के कारण बातचीत के रास्ते बंद होकर युद्ध की स्थितियां बनती हैं।

सूर्य और चंद्र ग्रहणों की कम समयावधि

ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार, जब बहुत कम दिनों के अंतराल पर सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण दोनों लगते हैं, तो वह समय पृथ्वी के लिए अत्यंत अमंगलकारी माना जाता है।

भले ही वह भारत में दृश्य ना हो लेकिन चंद्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण इस वर्ष बहुत ही कम अवधि में बार-बार आए हैं प्राचीन ग्रंथों (जैसे महाभारत काल) के संदर्भों के अनुसार, ऐसे ग्रहण संयोग बड़े रक्तपात, सत्ता परिवर्तन, और जन-आंदोलनों का कारण बनते हैं।

शनि राहु की युति

शनि 2025 में 29 मार्च को मीन राशि पर आए थे और राहु भी इस समय मीन राशि पर थे जो की 18 में को कुंभ राशि में आए हैं इस कारण इनकी युति होने की वजह से और राहु की धनी की राशि में भ्रमण के कारण तथा शनि का कुंभ राशि पर अढैया होने के कारण या आक्रामक स्थितियां बनी है।

मंगल राहु और शनि की युति होने के कारण मंगल देव 23 फरवरी से 2 अप्रैल 2026 तक कुंभ राशि में रहे, जिसके बाद वे मीन राशि में प्रवेश कर गए।

अंगारक योग का निर्माण: चूंकि राहु पहले से ही कुंभ राशि में मौजूद थे, इसलिए 23 फरवरी को मंगल के कुंभ राशि में प्रवेश करते ही वहां 'मंगल-राहु अंगारक योग' बन गया था।

पंचग्रही योग: इस दौरान कुंभ राशि में एक बेहद दुर्लभ संयोग भी बना था, जहां शनि के स्वामित्व वाली इस राशि में मंगल, राहु, सूर्य, बुध और शुक्र पांच ग्रह एक साथ मौजूद थे। इसी वजह से फरवरी और मार्च 2026 के महीनों में वैश्विक स्तर पर काफी उथल-पुथल और तनाव देखने को मिला था।।

नीचे राशि कर्क राशि में स्थित मंगल और वहीं पर अपनी उच्च राशि में स्थित गुरु के प्रभाव के कारण विश्व में बन रही स्थितियों का फलादेश।

अचानक सैन्य कार्रवाइयां: कर्क एक जल तत्व की संवेदनशील राशि है। यहाँ नीच के मंगल वैश्विक नेताओं में व्यावहारिक सोच को कम करके भावनात्मक आक्रोश और अहंकार को बढ़ाते हैं। इसके प्रभाव से सीमाओं पर अचानक गोलाबारी, हवाई हमले या परमाणु शक्ति की धमकियां बढ़ सकती हैं।

सत्तारूढ़ दलों में कलह: कई देशों में आंतरिक राजनीतिक संकट, तख्तापलट के प्रयास या सरकारों के भीतर बड़े नेताओं के बीच आपसी टकराव खुलकर सामने आ सकते हैं।

1. प्राकृतिक आपदाएं (Natural Disasters)

जल और अग्नि का खतरनाक संयोग:

कर्क जल तत्व की राशि है और मंगल अग्नि तत्व के ग्रह हैं। इन दोनों के विरोधाभास के कारण दुनिया के कुछ हिस्सों में अप्रत्याशित समुद्री तूफान, सुनामी, भारी बाढ़ या तटीय क्षेत्रों में भारी तबाही की आशंका रहती है।

दूसरी ओर, फैक्ट्रियों, युद्धपोतों या रासायनिक संयंत्रों में भीषण आगजनी की घटनाएं भी सामने आ सकती हैं।

भूकंप और भूस्खलन: पृथ्वी के कारक मंगल के कमजोर होने से भूगर्भीय हलचलें बढ़ती हैं, जिससे संवेदनशील क्षेत्रों में मध्यम से तीव्र श्रेणी के भूकंप और पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन (landslides) देखने को मिल सकते हैं।

2. आर्थिक और व्यापारिक जगत (Economy & Markets)

बाजार में अस्थिरता: रियल एस्टेट (भूमि-भवन), निर्माण सामग्री (सीमेंट, सरिया), और शेयर बाजार (विशेषकर रक्षा, मेटल और आईटी सेक्टर्स) में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है।

महंगाई और आपूर्ति में बाधा: युद्ध या प्राकृतिक आपदाओं के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल (Crude Oil), गैस और खाद्यान्न की आपूर्ति प्रभावित हो सकती है, जिससे वैश्विक स्तर पर महंगाई का दबाव बढ़ेगा।

3. सामाजिक वातावरण (Social Environment)

जन-आक्रोश और विरोध प्रदर्शन: आम जनता में सरकारों या नीतियों के खिलाफ गुस्सा भड़क सकता है, जिससे कई देशों में उग्र आंदोलन, दंगे या हड़ताल जैसी स्थितियां बन सकती हैं।

दुर्घटनाओं में वृद्धि: सड़क, रेल या हवाई यातायात में मानवीय चूक या तकनीकी खराबी के कारण बड़ी दुर्घटनाओं का ग्राफ बढ़ सकता है।

2026 में पुरुषोत्तम मास बड़ा था जो की ज्येष्ठ के महीने में आया था इसका फल वैदिक ज्योतिष के अनुसार जब-जब जेठ के महीने में पुरुषोत्तम मास पड़ता है तो तो उसे वर्ष स्थितियां बहुत तनावपूर्ण रहती हैं बड़े-बड़े देशों के राष्ट्रीय अध्यक्ष में आपस में तनाव होता है और संघर्ष की स्थिति बनती है।

60 संवत्सर में वर्तमान में रुद्र के संवत्सर और 2026 में रौद्र नाम का संवत्सर इसका विशेष प्रभाव 2026 में है।

रुद्र (शिवजी) का भाग (संवत्सर 41 से 60)

नाम: इन्हें 'प्लवंग आदि' संवत्सर कहा जाता है।

प्रभाव: इस कालखंड के स्वामी रुद्र (संहार के देवता) हैं। इसलिए इन 20 वर्षों के दौरान संसार में उथल-पुथल, बड़े बदलाव, प्राकृतिक आपदाएं, वैचारिक मतभेद और युद्ध जैसी स्थितियां अधिक देखने को मिलती हैं।

वर्तमान समय (2026) की स्थिति:

वर्तमान विक्रम संवत 2083 (वर्ष 2026-27) में 'रौद्र' संवत्सर चल रहा है, जो कि इस 60 वर्षों के चक्र का 54वाँ (54th) संवत्सर है। चूंकि 54वाँ संवत्सर 41 से 60 के दायरे में आता है, इसलिए हाँ, इस समय जो संवत्सर चल रहा है, वह रुद्र (शिव) के ही प्रभाव क्षेत्र का संवत्सर है। यही कारण है कि इस समय विश्व भर में इतनी उग्रता और अशांति का माहौल बना हुआ है। जब यह 60 वर्षों का चक्र समाप्त होकर दोबारा पहला (प्रभव) संवत्सर शुरू होगा, तब पुनः ब्रह्मा जी का शांतिपूर्ण प्रभाव प्रारंभ होगा।

अब आगे क्या होगा

मित्रों आने वाले समय में लगभग 5-6 वर्षों तक तनाव की स्थितियां बनी रहने की संभावना है जब रुद्र का संवत्सर होता है तो संहार की स्थिति बनती है वैदिक धर्म ग्रंथो के अनुसार कई कल में वर्तमान में जो समय चल रहा है उसके अनुसार जितने भी राजा और राष्ट्रीय अध्यक्ष होंगे वह सभी एक से बढ़कर एक क्रूर और हिंसक होंगे।

प्रजा के ऊपर अधिक से अधिक टैक्स लगेगा जिससे प्रजा बहुत परेशान होगी एवं प्रजा में भी कुछ लोग बहुत ही दुष्ट प्रवृत्ति के होंगे जो सरकार की आंखों में धूल जोकर सिर्फ और सिर्फ जनता का ही शोषण करेंगे।

वर्तमान में बदलाव की स्थिति है और लगभग 5 वर्षों बाद जब ब्रह्मा के संवत्सर आएंगे तो संसार में शांति और नया सृजन देखने को मिलेगा आम जनमानस के लिए यही संदेश है कि कलयुग के दोषों से बचते हुए अधिक से अधिक अपनी कामनाओं को वश में करते हुए भगवान के आश्रित रहे और भगवान का भजन करें इसी से बचा जा सकता है।

विचार लेख

महर्षि पतंजलि कृत 'योग दर्शन' – आत्मकल्याण और यथार्थ स्वास्थ्य का प्रत्यक्ष मार्ग



– प्रकाश त्रिपाठी
(वरिष्ठ कार्यकारी संपादक, देश दर्पण संवाद)



"हम खबर नहीं आईना दिखाते हैं" के अपने ध्येय के साथ 'देश दर्पण संवाद' निरंतर समाज को यथार्थ से परिचित कराता रहा है। इसी कड़ी में, एक संपादक और योग के विद्यार्थी के रूप में मेरा यह मूल उद्देश्य है कि पाठकों तक सही ज्ञान और वास्तविक स्वास्थ्य का मर्म पहुंचे। भारतीय ज्ञान परंपरा का अनमोल रत्न, महर्षि पतंजलि रचित 'योग-दर्शन' मात्र एक सैद्धांतिक (किताबी) ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव शरीर और मन को पूर्णता की ओर ले जाने वाला एक व्यावहारिक विज्ञान है। इस महान शास्त्र के ज्ञान को आम जनमानस तक सुलभ बनाने में टीकाकार हरिकृष्णदास गोयन्दका जी की भूमिका अत्यंत वंदनीय है, जिन्होंने मूल सूत्रों की बहुत ही सरल और साधारण हिंदी-व्याख्या प्रस्तुत की है। इस दर्शन का आरंभ ही "त्वमेव माता च पिता त्वमेव..." (अर्थात- हे परमात्मा! आप ही मेरी माता, पिता, बंधु, सखा, विद्या, धन और मेरे सर्वस्व हैं) के पवित्र समर्पण भाव से होता है। प्रेस और पत्रकारिता के सकारात्मक आदर्शों के अनुरूप, यह दर्शन पूर्णतः विवादरहित है। अन्य दर्शनों की भांति यह शास्त्र दूसरे मतों के व्यर्थ खण्डन-मण्डन (आलोचना या वाद-विवाद) में अपनी ऊर्जा नष्ट नहीं करता, बल्कि बहुत ही सरलता और युक्तिपूर्वक अपने सिद्धांतों को प्रस्तुत करता है। इसके 'विशेष वक्तव्य' में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि इसमें बहुत ही कम शब्दों में आत्मकल्याण (स्वयं के उद्धार) के प्रत्यक्ष उपाय बताए गए हैं। इसका अंतिम लक्ष्य मानव को अज्ञान से मुक्त कर 'कैवल्य-स्थिति' (मोक्ष या पूर्ण स्वतंत्रता की परम अवस्था) तक पहुंचाना है। पातंजल योग दर्शन एक अत्यंत विस्तृत और मनोवैज्ञानिक शास्त्र है। महर्षि पतंजलि ने जीवन को साधने वाले इस विज्ञान को मुख्य रूप से चार पादों (अध्यायों) में विभक्त किया है– समाधि पाद, साधन पाद, विभूति पाद और कैवल्य पाद। इन अध्यायों के अंतर्गत 'अष्टांग योग' (योग के आठ अंग– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि) का अत्यंत सूक्ष्म वर्णन किया गया है। ग्रंथ के निवेदन में बड़े ही विनम्र भाव से यह भी कहा गया है कि यदि इस साधारण प्रयास में कोई त्रुटि (गलती) रह गई हो, तो अनुभवी विद्वान उसमें आवश्यक सुधार कर सकते हैं (जैसा कि समाधिपाद के संदर्भ में उल्लेखित है)। शास्त्र के इस गूढ़ रहस्य को आत्मसात करने के लिए यह आवश्यक है कि हम इसे आद्योपांत (शुरुआत से लेकर अंत तक) गहराई से पढ़ें। यदि किसी विषय को लेकर मन में कोई विरोधाभास (शंका) उत्पन्न हो, तो उस पर तब तक निरंतर चिंतन करना चाहिए जब तक कि मन को पूरी तरह से संतोष न मिल जाए। मेरा यह प्रयास रहेगा कि 'देश दर्पण संवाद' के इस संपादकीय पृष्ठ पर आगे भी हम समाधि पाद से लेकर कैवल्य पाद और अष्टांग योग के एक-एक अंग पर निरंतर आसान भाषा में चर्चा करते रहें। आइए, योग दर्शन के इस यथार्थ ज्ञान को समझकर हम सभी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का वास्तविक लाभ प्राप्त करें।

विचार लेख

मध्यप्रदेश से हुंकार, पंजाब में नशामुक्ति का संकल्प! नशे के सौदागरों पर प्रहार, युवा भारत का संकल्प

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने पंजाब की धरती से नशे के विरुद्ध संकल्प दोहराते हुए स्पष्ट संदेश दिया है कि भाजपा की सरकार बनने पर 31 दिसंबर 2029 तक पंजाब को नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार से मुक्त करने का लक्ष्य है। यह केवल एक राजनीतिक संकल्प नहीं, बल्कि पंजाब की माताओं, युवाओं और परिवारों के भविष्य को सुरक्षित करने का आह्वान है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने धारा 370 हटाने, आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई करने और नक्सलवाद को समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। अब नशे के अवैध कारोबार के नेटवर्क पर प्रहार और युवाओं को नशे से बचाना राष्ट्रीय संकल्प है।

कार्रवाई के आँकड़े बताते हैं अंतर

उपलब्ध कराए गए आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2004 से 2014 के बीच 1,250 मामले दर्ज हुए, 1,360 गिरफ्तारियाँ हुईं और लगभग ₹5,900 करोड़ के मादक पदार्थ जब्त किए गए। वहीं, 2014 से 2024 के बीच 4,150 मामले दर्ज हुए, 6,300 गिरफ्तारियाँ हुईं और लगभग ₹22,000 करोड़ के मादक पदार्थ जब्त किए गए। मामलों में लगभग 230 प्रतिशत वृद्धि हुई। ये आँकड़े नशे के विरुद्ध कार्रवाई के बढ़े हुए पैमाने को दर्शाते हैं। केंद्र की एजेंसियाँ और राज्य पुलिस मिलकर तस्करी के नेटवर्क पर कार्रवाई कर रही हैं।

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में नशे के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार नशे के अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने, तस्करी के नेटवर्क के विरुद्ध कार्रवाई करने और युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के दृढ़ संकल्प और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में हमारा लक्ष्य स्पष्ट है–नशे के कारोबार पर कठोर प्रहार, युवाओं में जागरूकता और नशामुक्त समाज का निर्माण।



– डॉ. प्रेम व्यास,
BJP Pradesh Media Panelist

मध्यप्रदेश के भोपाल, इंदौर, मंदसौर, नीमच, रतलाम और रीवा सहित विभिन्न क्षेत्रों में नशे के विरुद्ध कार्रवाई तथा जनजागरण के प्रयास इस अभियान को मजबूती देते हैं।

उपलब्ध प्रदेश स्तरीय आँकड़ों के अनुसार, NDPS अधिनियम के तहत 2,700 से अधिक मामले दर्ज हुए, 3,700 से अधिक गिरफ्तारियाँ की गईं और लगभग 46,400 किलोग्राम मादक पदार्थ जब्त किए गए। प्रतिबंधित दवाओं के अवैध कारोबार पर कार्रवाई के साथ युवाओं को जागरूक करने के लिए रैलियाँ, शपथ कार्यक्रम और जनसंपर्क अभियान भी आयोजित किए गए।

नशे के कारोबार में किसी भी व्यक्ति की संलिप्तता हो, कानून सबके लिए समान होना चाहिए। विपक्ष से जुड़े व्यक्तियों के संबंध में लगाए गए आरोपों पर भी तथ्यों, जाँच और न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर ही बात होनी चाहिए।

हमारा संकल्प–नशामुक्त भारत

नशे के सौदागरों पर कठोर कार्रवाई, युवाओं में जागरूकता और नशे की गिरफ्त में आए लोगों का उपचार एवं पुनर्वास–इन्हीं प्रयासों से सुरक्षित समाज का निर्माण होगा।

पंजाब में श्री अमित शाह जी का नशामुक्ति संकल्प और मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में जनजागरण–लक्ष्य एक ही है, नशामुक्त भारत और सशक्त युवा भारत!

पंजाब से उठा संकल्प, मध्यप्रदेश से जनजागरण की हुंकार–नशे के कारोबार पर प्रहार और युवा भारत को सशक्त बनाने का अभियान निरंतर जारी रहेगा।

नशे से दूरी है जरूरी

नशे के कारोबार पर प्रहार, युवा शक्ति का उत्थान। नशामुक्त भारत–सुरक्षित युवा, सशक्त समाज, विकसित राष्ट्र!

जय भारत, जय हिंद!

विचार लेख

GeM के 10 साल : युवा भारत के लिए सरकारी कारोबार की 10 सीख

● प्रदीप सैनी

अवसर से ऑर्डर तक, और ऑर्डर से भुगतान तक–हर सप्ताह एक कम-जाना नियम

भाग – 7

OEM नहीं हैं... तो क्या GeM पर कारोबार नहीं कर सकते?

बिना OEM की अनुमति भी उत्पाद सूची बनाने और सरकारी BID में भाग लेने का अवसर–जानिए GeM के कुछ अनजाने नियम

प्रदीप सैनी

एक युवा कारोबारी बाजार में पेन, फाइल और कार्यालय का सामान बेचता है। एक दिन उसने GeM पर सरकारी खरीद की BID देखी और सोचा–"सामान तो मेरे पास है, लेकिन मैं निर्माता नहीं हूं। क्या सरकारी बाजार में मेरे लिए भी जगह है?"

जवाब दिलचस्प है–GeM पर कारोबार करने के लिए हर विक्रेता का OEM (मूल निर्माता) होना जरूरी नहीं।

इसका उदाहरण मई 2026 की एसजेवीएन की एक सरकारी BID में मिलता है, जिसमें पेन, स्टेपलर, फाइल, फोल्डर और रजिस्टर जैसी कई उत्पाद श्रेणियों के सामने

क्यू-4 अंकित था।

आखिर यह क्यू-4 क्या है?

GeM का वह नियम जिसे कई नए विक्रेता नहीं जानते

GeM की चतुर्थांश नीति (Quadrant Policy) के अनुसार उत्पाद श्रेणियों को चार प्रमुख वर्गों में बांटा गया है।

क्यू-1: केवल GeM से सत्यापित OEM ही अपने उत्पाद बिक्री के लिए प्रस्तुत कर सकते हैं।

क्यू-2: OEM तथा उसके पूर्व-अधिकृत पुनर्विक्रेता भाग ले सकते हैं। पुनर्विक्रेता निर्माता की मौजूदा उत्पाद सूची से अपना बिक्री प्रस्ताव जोड़ सकता है।

क्यू-3: OEM के साथ उसके पुनर्विक्रेता को भी निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार उत्पाद सूची बनाने का अवसर मिल सकता है।

क्यू-4: सबसे रोचक व्यवस्था! यहां *OEM की अलग से अनुमति लिए बिना भी पुनर्विक्रेता अपनी उत्पाद सूची प्रकाशित कर सकता है, हालांकि उत्पाद सूची का सत्यापन और अन्य निर्धारित नियम लागू रहते हैं।

यानी छोटी दुकान चलाने वाला युवा भी उपयुक्त श्रेणी में सरकारी कारोबार शुरू कर सकता है।

अपना ब्रांड है? जानिए OEM बनने की प्रक्रिया

यदि कोई युवा उद्यमी स्वयं उत्पाद बनाता है, तो वह GeM पर OEM बनने की प्रक्रिया अपना सकता है।

सबसे पहले GeM पर पंजीकरण कर संबंधित उत्पाद श्रेणी की पात्रता जांचनी होती है। जहां आवश्यक हो, वहां विक्रेता मूल्यांकन कराया जाता है।

इसमें निर्माण क्षमता, वित्तीय विवरण और आवश्यक दस्तावेजों की जांच की जा सकती है।

इसके बाद पोर्टल के उत्पाद सूची प्रबंधन अनुभाग में पंजीकृत ब्रांड, अपंजीकृत ब्रांड अथवा बिना ब्रांड वाले निर्माता के उपयुक्त विकल्प से मान्यता के लिए आवेदन किया जा सकता है। दस्तावेजों के सत्यापन और स्वीकृति के बाद संबंधित श्रेणी में OEM से जुड़ी विशेष सुविधाएं उपलब्ध हो सकती हैं।

ध्यान रहे–केवल GeM पर पंजीकरण या उद्यम प्रमाणपत्र होने से कोई संस्था अपने-आप OEM नहीं बन जाती।

बिना OEM की अनुमति कारोबार? एक छिपी जिम्मेदारी भी समझिए!

क्यू-4 श्रेणी में OEM की अलग अनुमति के बिना कारोबार का अवसर जरूर है, लेकिन असली और गुणवत्तापूर्ण सामान उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी समाप्त नहीं होती।

जरूरत पड़ने पर पुनर्विक्रेता को माल की वैध खरीद और आपूर्ति श्रृंखला से संबंधित दस्तावेज प्रस्तुत करने पड़ सकते हैं।

इतना ही नहीं, क्यू-4 में खराब उत्पाद के बदले नया उत्पाद उपलब्ध कराने की वारंटी की जिम्मेदारी स्वयं पुनर्विक्रेता की होती है। खरीदार को इसके लिए OEM के पास जाने की आवश्यकता नहीं होती।

यानी GeM अवसर के साथ जवाबदेही भी सुनिश्चित करता है।

पुनर्विक्रेता किन BID और RA में भाग ले सकता है?

जिस उत्पाद श्रेणी में पुनर्विक्रेता को वैध रूप से बिक्री प्रस्ताव देने की अनुमति है, उससे संबंधित सरकारी BID में वह तकनीकी मानक और निर्धारित शर्तें पूरी करके भाग ले सकता है।

यदि BID में RA अर्थात घटती कीमत वाली ऑनलाइन नीलामी* निर्धारित है, तो तकनीकी रूप से पात्र पुनर्विक्रेता भी लागू चयन नियमों के अनुसार उसमें भाग ले सकता है।

यहां दो कम-जानी बातें और हैं।

पहली: जिन निर्धारित मामलों में OEM द्वारा पुनर्विक्रेता और उसकी उत्पाद सूची पहले से सत्यापित हैं, वहां खरीदार को दोबारा OEM का अनुमति पत्र मांगने की आवश्यकता नहीं होती।

दूसरी: यदि सामान की किसी BID में दो या अधिक पात्र विक्रेताओं की न्यूनतम कीमत समान हो जाए, तो निर्धारित परिस्थितियों में अनिवार्य RA का भी प्रावधान है।

इसलिए केवल L1 बनने की नहीं, बल्कि RA के नियम समझने की भी जरूरत है।

आखिरी दिन उत्पाद सूची बनाना पड़ सकता है भारी!

कई नए विक्रेता सरकारी BID देखकर उसी दिन उत्पाद सूची बनाना शुरू करते हैं। जबकि GeM के प्रकाशित नियमों में उत्पाद सूची की स्वीकृति प्रक्रिया में सामान्यतः लगभग *48 घंटे* लगने की बात कही गई है।

इसलिए बेहतर है कि उत्पाद सूची पहले से तैयार और स्वीकृत रखी जाए, ताकि अच्छी BID मिलने पर अवसर हाथ से न निकले।

युवा उद्यमियों के लिए इस भाग की सबसे महत्वपूर्ण सीख–

"OEM नहीं हैं तो अवसर समाप्त नहीं। पहले अपनी उत्पाद श्रेणी, उसके नियम और BID में भाग लेने की पात्रता समझिए।"

क्योंकि GeM पर विक्रेता पंजीकरण, उत्पाद सूची का प्रकाशन और BID में भाग लेने की पात्रता–तीनों अलग-अलग चरण हैं।

सरकारी बाजार में सफलता केवल सामान उपलब्ध होने से नहीं, बल्कि नियमों की सही जानकारी और जिम्मेदारी निभाने की क्षमता से मिलती है।

अगली कड़ी — भाग 8

अब GeM पर सिर्फ सामान नहीं, AI, रोबोटिक्स और ड्रोन तकनीक भी बिक रही है!

सॉफ्टवेयर विकसित करने वाले युवाओं से लेकर space-tech Startup तक–सरकारी खरीद में नवाचार के नए अवसर कहां हैं और युवा उद्यमी उनका लाभ कैसे उठा सकते हैं? अगली कड़ी में जानेंगे।



खेल, शिक्षा और कला का अद्भुत संगम: विश्व चैंपियन आर्या चौधरी की स्वर्णिम उड़ान





● प्रकाश त्रिपाठी

भोपाल, देश दर्पण संवाद : अंगोला विश्व कप में स्वर्ण पदक जीतकर देश का मान बढ़ाने वाली इंदौर की बेटी, जो केज (रिंग) में अपराजेय फाइटर, पढ़ाई में मेधावी और मंच पर एक शानदार नृत्यांगना हैं।

'देश दर्पण संवाद' के लोकप्रिय पृष्ठ 'अतिथि देवो भवः' की इस बार की विशेष मेहमान हैं—भारत का गौरव और इंदौर की होनहार बेटी आर्या चौधरी। केज (रिंग), अकादमिक जगत और कला के मंच पर अपनी बहुआयामी प्रतिभा का लोहा मनवाने वाली आर्या ने हाल ही में अफ्रीकी देश अंगोला में आयोजित मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स (एमएमए) विश्व कप में स्वर्ण पदक जीतकर पूरे राष्ट्र का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया है।

उनकी इस ऐतिहासिक उपलब्धि, कड़े संघर्ष और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर 'देश दर्पण संवाद' के कार्यकारी संपादक प्रकाश त्रिपाठी ने उनसे एक विशेष साक्षात्कार किया।

बहुआयामी प्रतिभा की धनी हैं आर्या

भारत की बेटियां आज हर क्षेत्र में अपनी सफलता का परचम लहरा रही हैं और आर्या इसका जीवंत उदाहरण हैं।

वे एक विश्व स्तरीय एमएमए फाइटर, कराटे चैंपियन, कुशाग्र छात्रा और एक प्रशिक्षित शास्त्रीय नृत्यांगना हैं। वर्ष 2026 में लुआंडा (अंगोला) में आयोजित 'अंगोला दिपांडा ओपन विश्व कप' के महिला सीनियर एटमवेट (47.6 किलोग्राम) वर्ग में उन्होंने स्वर्ण पदक जीतकर स्वर्णिम इतिहास रच दिया है।

इससे पूर्व वर्ष 2025 में उन्होंने एशियन एमएमए चैंपियनशिप में स्वर्ण और विश्व एमएमए चैंपियनशिप (जॉर्जिया) में कांस्य पदक जीता था। चार बार की एमएमए और छह बार की राष्ट्रीय कराटे चैंपियन आर्या ने शिक्षा के मैदान में भी अपनी मेधा का परचम लहराया है।

वर्ष 2023 में अपने पहले ही प्रयास में उन्होंने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 385वीं रैंक हासिल की थी। वर्तमान में वे सेज विश्वविद्यालय, इंदौर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही हैं और प्रयाग संगीत समिति से शास्त्रीय कथक नृत्य में पारंगत हैं।

विशेष साक्षात्कार

(कार्यकारी संपादक प्रकाश त्रिपाठी के साथ आर्या चौधरी की खास बातचीत)

प्रश्न: मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स (एमएमए) जैसे चुनौतीपूर्ण और आक्रामक खेल में आप कैसे आईं? इस सफर की शुरुआत कहां से हुई?

उत्तर: मेरा सफर तीन-चार साल की बेहद कम उम्र में कराटे से शुरू हुआ था। आगे चलकर मैंने एमएमए को अपनाया और निरंतर कठोर अभ्यास करते हुए राष्ट्रीय से अंतरराष्ट्रीय स्तर तक का मुकाम हासिल किया।

प्रश्न: आपको इस विश्व स्तरीय मुकाम तक पहुंचाने के लिए शुरुआत में किसने प्रशिक्षण दिया और युद्ध कला की बारीकियां सिखाईं?

उत्तर: मेरे गुरु सेंसेई विकास शर्मा जी हैं, और वर्तमान में भी मैं उन्हीं के कुशल मार्गदर्शन में अनुशासन और मार्शल आर्ट्स की बुनियादी तकनीकें व बारीकियां सीख रही हूँ।

प्रश्न: एक चैंपियन के रूप में आपको गढ़ने में आपके गुरु (कोच) की क्या भूमिका रही है?

प्रश्न: एक चैंपियन के रूप में आपको गढ़ने में आपके गुरु (कोच) की क्या भूमिका रही है?

मेरे गुरु ने मुझे सिर्फ एक बेहतर फाइटर नहीं, बल्कि एक अनुशासित और मजबूत इंसान बनाया है। मेरी सफलता में उनके सटीक मार्गदर्शन और कड़ी मेहनत का बहुत बड़ा योगदान है।

प्रश्न: अंगोला में आयोजित विश्व कप में स्वर्ण पदक जीतकर जब आपने तिरंगा लहराया, तो उस ऐतिहासिक क्षण की अनुभूति कैसी थी?

उत्तर: तिरंगे के साथ विश्व चैंपियन बनना मेरे जीवन का अत्यंत गौरवपूर्ण क्षण था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए कोई मानसिक दबाव नहीं, बल्कि एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी और प्रेरणा है।

प्रश्न: एक तरफ एमएमए का आक्रामक केज, दूसरी तरफ इंजीनियरिंग की पढ़ाई, साथ ही कथक जैसा सौम्य नृत्य और एनडीए जैसी कठिन परीक्षा! आप इन अलग-अलग क्षेत्रों में एक साथ इतना सटीक संतुलन कैसे स्थापित करती हैं?

उत्तर: कठोर अनुशासन और समय का सही प्रबंधन मेरी सबसे बड़ी ताकत हैं। इन सभी क्षेत्रों ने मुझे अलग-अलग तरीके से बेहतर बनाया है और यह सिखाया है कि पूर्ण समर्पण के साथ कई सपनों को एक साथ लेकर चला जा सकता है।

प्रश्न: फाइट के लिए केज (रिंग) में उतरने से ठीक पहले आपके दिमाग में क्या चल रहा होता है? आप खुद को मानसिक रूप से कैसे तैयार करती हैं?

उत्तर: मैं अपनी रणनीति, कठोर प्रशिक्षण और कोच की सलाह पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करती हूँ। मेरे लिए मानसिक मजबूती का अर्थ है, भारी दबाव के बीच भी शांत रहकर बिल्कुल सही निर्णय लेना।

प्रश्न: एक विश्व चैंपियन की दिनचर्या, आहार और फिटनेस रूटीन में मुख्य रूप से क्या शामिल होता है?

उत्तर: मेरी दिनचर्या में एमएमए का कड़ा अभ्यास, शारीरिक मजबूती के व्यायाम, घर का बना संतुलित भोजन, पर्याप्त प्रोटीन और शरीर की ऊर्जा बहाल करना (रिकवरी) शामिल है। मेरे लिए निरंतरता ही फिटनेस की असली कुंजी है।

प्रश्न: वर्तमान परिदृश्य में महिला सुरक्षा एक बेहद गंभीर विषय है। बालिकाओं को आत्मरक्षा (सेल्फ डिफेंस) के लिए आगे आने हेतु आप क्या मूलमंत्र देना चाहेंगी?

उत्तर: मैं हर बेटी से कहूँगी कि वे आत्मरक्षा के गुर सीखें, अपनी क्षमताओं पर पूरा भरोसा रखें और जागरूक बनें। आत्मविश्वास की सच्ची शुरुआत खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाने से ही होती है।

प्रश्न: शिक्षा, रक्षा क्षेत्र और खेल—तीनों में उत्कृष्ट होने के नाते, भविष्य में आप मुख्य रूप से किस दिशा में अपना करियर बनाना चाहती हैं?

उत्तर: फिलहाल मेरा मुख्य लक्ष्य एमएमए में भारत के लिए और भी बड़े अंतरराष्ट्रीय खिताब जीतना है। इसके साथ ही, मैं अपनी मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी पूरी गंभीरता और लगन के साथ कर रही हूँ।

प्रश्न: आपके इस चुनौतीपूर्ण और बहुआयामी सफर में परिवार और माता-पिता का कितना सहयोग रहा?

उत्तर: मेरे माता-पिता हमेशा से मेरी सबसे बड़ी ताकत रहे हैं। उनकी निरंतर प्रेरणा और अटूट विश्वास ने ही मुझे पढ़ाई और खेल, दोनों ही मोर्चों पर निर्भीक होकर आगे बढ़ने का हौसला दिया है।

प्रश्न: 'देश दर्पण संवाद' के हमारे युवा पाठकों और उन बेटियों को आप क्या संदेश देना चाहेंगी, जो समाज की परवाह किए बिना अपने सपनों की उड़ान भरना चाहती हैं?

उत्तर: मेरा यही संदेश है कि अपने सपनों को कभी भी दूसरों की सोच के कारण सीमित मत कीजिए। निरंतर मेहनत करते रहिए, अपनी असफलताओं से सीखिए और हमेशा खुद पर दृढ़ विश्वास रखिए।

'हीलिंग फॉर वर्ल्ड पीस 2.0' का सफल आयोजन

मन की शांति से विश्व शांति की ओर एक सामूहिक पहल



● शिवम शुक्ला

भोपाल, देश दर्पण संवाद : राजधानी भोपाल में Healing for World Peace 2.0 का सफल आयोजन किया गया। इस आध्यात्मिक एवं सामूहिक पहल का उद्देश्य व्यक्तिगत शांति, सकारात्मक ऊर्जा और आत्म-जागरूकता के माध्यम से विश्व शांति के संदेश को जन-जन तक पहुँचाना रहा। कार्यक्रम की केंद्रीय थीम 'जीव-जगत-जगदीश्वर' रही, जिसने मानव, प्रकृति और परम चेतना के आपसी संबंध को समझने का अवसर प्रदान किया।

कार्यक्रम को एक विशिष्ट आध्यात्मिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसमें आधुनिक तकनीक और पारंपरिक आध्यात्मिक विधाओं का समन्वय देखने को मिला। 360-डिग्री इमर्सिव विजुअल अनुभव, हेडफोन-आधारित ऑडियो, योग, एनर्जी हीलिंग और कथा-जैमिंग जैसी गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को ध्यान, आत्मचिंतन और आंतरिक शांति से जुड़ने का अवसर मिला।

इस आयोजन में ऊर्जा गुरु आयुष गुप्ता, योगिनी आरविका गुप्ता और कथावाचिका पलक किशोरी जी ने अपनी उपस्थिति एवं प्रस्तुति से कार्यक्रम को विशेष बनाया। कार्यक्रम के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि विश्व शांति की शुरुआत प्रत्येक व्यक्ति के भीतर शांति स्थापित करने से होती है। जब व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और व्यवहार में संतुलन विकसित करता है, तो उसका सकारात्मक प्रभाव परिवार, समाज और व्यापक मानव समुदाय तक पहुँच सकता है।

Healing for World Peace 2.0 ने विभिन्न स्थानों और देशों से जुड़े प्रतिभागियों को शांति, ध्यान और आत्म-अन्वेषण के साझा उद्देश्य से जोड़ने का प्रयास किया। इस पहल ने सामूहिक प्रार्थना, सकारात्मक संकल्प और आध्यात्मिक जागरूकता की शक्ति को सामने रखा। कार्यक्रम का उद्देश्य केवल एक आयोजन तक सीमित न रहकर विश्व शांति के संदेश को एक निरंतर जन-अभियान के रूप में आगे बढ़ाना है।

आयोजकों की दीर्घकालिक परिकल्पना भोपाल को ध्यान, आध्यात्मिकता, आत्म-अन्वेषण और विश्व शांति के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित करने की है। इस दिशा में ऐसे आयोजन लोगों को अपने भीतर झाँकने, जीवन के प्रति अधिक सजग दृष्टिकोण अपनाने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस पहल को सफल बनाने में विभिन्न संस्थानों, संगठनों और सहयोगी भागीदारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनमें SAGE University, Manasrovar College, LNCT, Sagar Group, Taj Lakefront, Sukoon-e-Bhopal, WiseLife (Wellness Partner), Madhya Pradesh Tourism, MP Culture Department, Media Square, GA Studios, Anantam, Agarwal Jewellers और The Fifth Veda सहित अन्य सहयोगी शामिल रहे।

आयोजकों ने कार्यक्रम के प्रति सहयोग और समर्थन के लिए दिलीप बिल्डकॉन लिमिटेड के CMD एवं चेयरमैन दिलीप सूर्यवंशी तथा SAGE University के संजीव अग्रवाल सहित सभी सहयोगियों, प्रतिभागियों और समर्थकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Healing for World Peace 2.0 का मूल संदेश स्पष्ट रहा, शांति की शुरुआत स्वयं से होती है। जब हम अपने भीतर शांति, करुणा और सकारात्मकता विकसित करते हैं, तभी एक अधिक संवेदनशील, संतुलित और शांतिपूर्ण विश्व की दिशा में सार्थक कदम बढ़ा सकते हैं।

दिग्गज क्रिएटर्स से 'देश दर्पण संवाद' की खास चर्चा, जल्द शुरू होगा 'क्रिएटर और इन्फ्लुएंसर कॉर्नर'



भोपाल, देश दर्पण संवाद । मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित ताज लेकफ्रंट में शनिवार (24 अक्टूबर 2026) को मध्य भारत के सबसे बड़े क्रिएटर महोत्सव 'भोपाल क्रिएटर समिट' का चौथा संस्करण सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। डिजिटल कंटेंट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), टूरिज्म और ब्रांडिंग पर केंद्रित इस महाकुंभ में देशभर से 1000 से अधिक डिजिटल क्रिएटर्स, इन्फ्लुएंसर्स, फिल्ममेकर्स और प्रबुद्ध जनों ने सहभागिता की। इस भव्य आयोजन में साप्ताहिक समाचार पत्र 'देश दर्पण संवाद' ने अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई।

कार्यक्रम के दौरान 'देश दर्पण संवाद' के कार्यकारी संपादक प्रकाश त्रिपाठी और शिवम शुक्ला ने समिट के सफल आयोजक मयंक तिवारी से विशेष भेंट कर उन्हें इस शानदार आयोजन के लिए आत्मीय शुभकामनाएं दीं।

'अगले दिन को रात में ही तय कर लो': मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

सुबह से देर रात तक चले इस आयोजन के शाम के सत्र में प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी शामिल हुए। उन्होंने क्रिएटर्स से सीधा संवाद कर उनके सवालों के जवाब दिए और अवार्ड सेरेमनी में पुरस्कार पाने वाले क्रिएटर्स के साथ ग्रुप फोटो भी खिंचवाई। इस मौके पर मुख्यमंत्री को क्रिएटरों की ओर से तैयार किया गया एक विशेष वीडियो भी दिखाया गया, जिसकी उन्होंने जमकर सराहना की।

युवाओं को सफलता का मंत्र देते हुए सीएम ने कहा, **"अगले दिन तुम्हें क्या करना है, यह रात को ही तय कर लो। उसके आधार पर तैयारी करोगे तो दिनभर प्लान के अनुरूप काम कर पाओगे और थकान भी नहीं होगी।"** उन्होंने आगे कहा कि मध्य प्रदेश में हमारी सरकार आने के बाद हजारों करोड़ रुपये का निवेश आया है। 12 लाख करोड़ रुपये से अधिक के प्रस्ताव धरातल पर उतारे जा चुके हैं।

सोशल मीडिया के क्षेत्र में काम कर रहे कंटेंट क्रिएटर्स को इस विषय पर रील बनाकर जन-जन तक सरकार की बात पहुंचानी चाहिए। दिग्गज क्रिएटर्स से 'देश दर्पण संवाद' की खास चर्चा समिट के दौरान **'देश दर्पण संवाद'** के कार्यकारी संपादक प्रकाश त्रिपाठी और शिवम शुक्ला ने देश के शीर्ष डिजिटल क्रिएटर्स से मुलाकात कर उन्हें अखबार की प्रतियां सप्रेम भेंट कीं और डिजिटल जगत के भविष्य पर विस्तृत चर्चा की।

इस दौरान आईटी सेक्टर छोड़कर पैशन को चुनने वाले, फोर्ब्स (Forbes) सूची में शामिल और इंस्टाग्राम पर 50 लाख (5 मिलियन) फॉलोअर्स वाले टेक एक्सपर्ट नमन देशमुख से खास बातचीत हुई। गौरतलब है कि नमन को हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'नेशनल क्रिएटर अवार्ड' से सम्मानित किया गया है।

इसके साथ ही, इंस्टाग्राम पर 8 लाख 21 हजार (821K) फॉलोअर्स वालीं प्रख्यात डिजिटल मार्केटर दामिनी त्रिपाठी के साथ भी रचनात्मक संवाद हुआ। दामिनी 2019 से इस क्षेत्र में सक्रिय हैं और एल्गोरिदम की गहरी समझ व रिसर्च आधारित वीडियो के लिए पहचानी जाती हैं। इनके अलावा इंस्टाग्राम पर लगभग एक मिलियन फॉलोअर्स वाले मशहूर क्रिएटर गणेश वनारे, प्रख्यात टेक विशेषज्ञ आर्यन त्रिपाठी (297K फॉलोअर्स) और आयुषी सिंह जैसे दिग्गजों के साथ भी शानदार चर्चा हुई।

पैनलिस्ट और 100 से अधिक प्रबुद्ध जनों से सीधा संपर्क

आयोजन के दौरान 'देश दर्पण संवाद' की टीम ने समिट के विभिन्न पैनल में शामिल शीर्ष उद्योग विशेषज्ञों से भी संपर्क स्थापित किया। इनमें आईटी डायरेक्टर से फोटोग्राफर बनीं शुभ्रता स्याल, मुरलीवालाज के सीईओ विवेक यादव, आदित्य चौधरी और एआई फाउंडर आदर्श शामिल रहे।

टीम ने इंस्टाग्राम पर 5 लाख फॉलोअर्स वाले मशहूर लेखक व कंसल्टेंट प्रभात पोद्दार, 'कला सागा' की संस्थापक प्रिया नामदेव, मोनिका अहेलिया, शुभम पांडे, दानिश दुर्रानी और मोहित सक्सेना जैसे शीर्ष रचनाकारों से भी मुलाकात की।

साथ ही पर्यटन और डिजिटल क्षेत्र में बेहतरीन काम कर रहे रौनक, ट्रैवलर प्रियांश जैन, मुस्कान, मैथिली, जयंत, भावना जायसवाल, शिवांश चौबे, चिन्मय गोधा, एपी और शुभम जैन जैसे अनेक प्रतिभावान रचनाकारों से सार्थक संवाद स्थापित किया।

जल्द आ रहा है विशेष 'क्रिएटर और इन्फ्लुएंसर कॉर्नर'

इस डिजिटल महाकुंभ से प्रेरणा लेते हुए 'देश दर्पण संवाद' ने रचनाकारों के लिए एक नई रचनात्मक पहल की घोषणा की है। अब अखबार के आगामी हर अंक में एक विशेष 'क्रिएटर और इन्फ्लुएंसर कॉर्नर' प्रकाशित किया जाएगा।

इस विशेष कॉलम के माध्यम से इन प्रतिभावान डिजिटल रचनाकारों की संघर्ष गाथा, उनके सकारात्मक कार्य और उनके विचार पाठकों तक निरंतर पहुंचाए जाएंगे, ताकि समाज और युवाओं को डिजिटल युग में एक नई दिशा व प्रेरणा मिल सके।

क्रीऐटर कॉर्नर

हमारे इस हफ्ते के क्रीऐटर



नमस्ते भोपाल मीडिया नेटवर्क एक छोटे से समुदाय से उभरकर आज मध्य प्रदेश का एक बड़ा डिजिटल पावरहाउस बन चुका है। साल 2016 में उत्कर्ष गुप्ता द्वारा शुरू किया गया यह प्लेटफॉर्म शुरुआत में भोपाल के कंटेंट क्रिएटर्स और उभरते वीडियो एडिटर्स को एक मंच देने वाला कम्युनिटी हब था। स्थानीय प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू हुआ यह सफर उत्कर्ष के दूरदर्शी नेतृत्व में तेजी से आगे बढ़ा। पत्रकारिता के क्षेत्र में 27 से अधिक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कार जीत चुके उत्कर्ष गुप्ता ने चौधरी अंकित सिंह के साथ साझेदारी करके इस नेटवर्क को और मजबूती दी। इन दोनों ने हमेशा नए विचारों का स्वागत किया और उभरते क्रिएटर्स को आगे बढ़ने का पूरा मौका दिया। साल 2025 में उत्कर्ष की इस रचनात्मकता को राष्ट्रीय स्तर पर तब बड़ी पहचान मिली, जब यूट्यूब इंडिया (YouTube India) ने उन्हें भारत के टॉप 50 क्रिएटिव लोगों में शामिल किया।

रोमांच के चरम पर टीम इंडिया की फतह: तिलक और नीतीश के तूफान में उड़ा न्यूजीलैंड, सीरीज में 2-0 की शानदार बढ़त









नई दिल्ली। भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेली जा रही टी20 सीरीज रोमांच की नई इबारत लिख रही है। दोनों ही मुकाबले सांस रोक देने वाले रहे, लेकिन अंत में जीत का परचम टीम इंडिया ने ही लहराया।

दूसरे टी20 मुकाबले में एक समय ऐसा लग रहा था कि मैच भारत के हाथ से फिसल चुका है, लेकिन तभी तिलक वर्मा और नीतीश रेड्डी की जोड़ी ने ऐसा पलटवार किया जिसने हारी हुई बाजी को शानदार जीत में तब्दील कर दिया।

इस जीत के साथ ही भारत ने सीरीज में 2-0 की बढ़त हासिल कर ली है। 30 गेंदों का वो तूफानी प्रहार जब कीवी टीम जीत की गंध महसूस कर रही थी और भारतीय खेमे में निराशा छा रही थी, तब क्रीज पर तिलक और नीतीश ने मोर्चा संभाला।

इन दोनों बल्लेबाजों ने क्रीज पर बिताए महज 40 मिनट और 30 गेंदों के भीतर 69 रनों की ऐसी आक्रामक और निर्णायक साझेदारी की, जिसने न्यूजीलैंड के गेंदबाजों के होश उड़ा दिए।

यह वो टर्निंग पॉइंट था, जिसने भारत को लगभग तय हार के मुहाने से निकालकर जीत का ताज पहना दिया।

पहला मैच भी रहा था फुल-टू थ्रिलर

यह पूरी सीरीज ही क्रिकेट फैंस के लिए किसी ब्लॉकबस्टर से कम नहीं है। इससे पहले खेला गया पहला टी20 मुकाबला भी आखिरी ओवरों तक गया था, जहां भारतीय टीम ने दबाव को झेलते हुए एक बेहद रोमांचक जीत दर्ज की थी।

लगातार दो करीबी और सांस अटका देने वाले मैचों में फतह हासिल कर टीम इंडिया ने दिखा दिया है कि दबाव के क्षणों में वह दुनिया की सबसे खतरनाक टीमों में से एक है।

16 विकेट का शानदार प्रदर्शन भी नहीं आया काम: श्रीलंका में चमके मानव सुथार न्यूजीलैंड दौरे से क्यों हुए बाहर?



● प्रकाश त्रिपाठी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट में चयन की प्रक्रिया अक्सर पहेली बनी रहती है। कब किस खिलाड़ी को उसकी मेहनत का इनाम मिल जाए और किसे शानदार खेल के बावजूद बाहर बैठा दिया जाए, यह समझना बेहद मुश्किल है।

इस बार चयनकर्ताओं के इस रवैये का शिकार युवा बाएं हाथ के स्पिनर मानव सुथार हुए हैं। हाल ही में श्रीलंका के चुनौतीपूर्ण दौरे पर अपनी घूमती गेंदों से 16 विकेट चटकाने वाले इस होनहार गेंदबाज को आगामी न्यूजीलैंड टेस्ट सीरीज के लिए टीम इंडिया में शामिल नहीं किया गया है।

मानव ने अपने अब तक के छोटे से करियर में यह साबित कर दिया है कि वह दबाव में भी बेहतरीन गेंदबाजी कर सकते हैं। श्रीलंका की पिचों पर उनका प्रदर्शन इतना शानदार था कि उन्होंने अहम मौकों पर भारतीय टीम को मैच में वापस लाने का काम किया। क्रिकेट प्रेमी और विशेषज्ञ यही उम्मीद कर रहे थे कि इस शानदार लय को देखते हुए उन्हें न्यूजीलैंड दौरे के लिए भी टीम में बरकरार रखा जाएगा।

लेकिन जब टीम का ऐलान हुआ, तो उसमें इस होनहार खिलाड़ी का नाम कहीं नहीं था। इस अप्रत्याशित फैसले ने क्रिकेट जगत में एक नई बहस छेड़ दी है कि आखिर चयनकर्ता युवा खिलाड़ियों से और किस तरह के प्रदर्शन की उम्मीद करते हैं। हालांकि चयनकर्ताओं ने इस फैसले पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है, लेकिन क्रिकेट के जानकारों की मानें तो इस अनदेखी के पीछे सबसे बड़ा कारण न्यूजीलैंड की तेज और उछाल भरी पिचें हैं।

वहां आमतौर पर तेज गेंदबाजों को स्विंग और सीम का भरपूर फायदा मिलता है, जिससे स्पिनरों की भूमिका काफी सीमित हो जाती है। ऐसे में टीम प्रबंधन को अतिरिक्त विशेषज्ञ स्पिनर ले जाने की दरकार महसूस नहीं हुई। इसके अलावा भारतीय टीम में पहले से ही रवींद्र जडेजा, वॉशिंगटन सुंदर और कुलदीप यादव जैसे स्थापित स्पिनर मौजूद हैं।

विदेशी दौरों पर टीम मैनेजमेंट हमेशा उन खिलाड़ियों को प्राथमिकता देता है जो गेंद के साथ-साथ निचले क्रम में बल्ले से भी अहम योगदान दे सकें। जडेजा और सुंदर इस पैमाने पर पूरी तरह फिट बैठते हैं। तकनीकी और टीम संयोजन के नजरिए से देखा जाए तो यह फैसला व्यावहारिक लग सकता है, लेकिन एक युवा खिलाड़ी के दृष्टिकोण से यह बेहद हताश करने वाला है।

लगातार कड़ी मेहनत और बेहतरीन आंकड़ों के बावजूद अगर किसी खिलाड़ी को विदेशी जमीन पर अपनी प्रतिभा साबित करने का मौका नहीं मिलता, तो इससे उसका आत्मविश्वास डगमगा सकता है।

टेस्ट क्रिकेट में जीत के लिए 20 विकेट चटकाना सबसे जरूरी होता है और सुथार ने अपनी काबिलियत से यह साबित किया है कि वह लंबी गेंदबाजी करके विकेट निकालने का हुनर रखते हैं।

अब यह देखना दिलचस्प होगा कि भारतीय क्रिकेट का सिस्टम इस प्रतिभाशाली स्पिनर के भविष्य को किस तरह से संवारता है और उन्हें दोबारा अपनी चमक बिखेरने का मौका कब मिलता है।

मानव सुथार: घरेलू रिकॉर्ड बनाम मौके

रणजी ट्रॉफी 2022–23

मैच	विकेट	औसत
6	39	20.33

बल्लेबाजी

2 अर्धशतक

दलीप ट्रॉफी 2024

7/49
एक पारी में 7 विकेट

भारत ए बनाम ऑस्ट्रेलिया ए, 2025

दूसरे अनौपचारिक टेस्ट में
5 विकेट

दलीप ट्रॉफी 2025

सेंट्रल ज़ोन की प्लेइंग XI में जगह नहीं मिली;
रिज़र्व खिलाड़ी के रूप में बेंच पर रहे.

घरेलू प्रदर्शन प्रभावशाली था, लेकिन 2025 में चयन और प्लेइंग XI में मौके सीमित रहे.

मनोरंजनम्

आयुष्मान-सारा की 'उड़ता तीर' ने बॉक्स ऑफिस पर भरी उड़ान, 'रामायण 2' के लिए दर्शकों को करना होगा लंबा इंतजार



मुंबई। बॉलीवुड गलियारों के लिए यह हफ्ता बेहद हलचल भरा रहा है। एक तरफ जहां बॉक्स ऑफिस पर एक अनोखी कल्ट-कॉमेडी फिल्म ने दस्तक देकर दर्शकों को हंसने पर मजबूर कर दिया है, वहीं दूसरी तरफ भारतीय सिनेमा इतिहास की सबसे भव्य पौराणिक गाथा की अगली किस्त को लेकर एक ऐसा अपडेट आया है जिसने फैंस को थोड़ा इंतजार करने पर मजबूर कर दिया है।

आइए डालते हैं इस हफ्ते की बॉलीवुड की दो सबसे बड़ी और पुख्ता खबरों पर एक नजर।

धमाके के साथ रिलीज हुई आयुष्मान-सारा की 'उड़ता तीर'

लंबे इंतजार के बाद अभिनेता आयुष्मान खुराना और सारा अली खान अभिनीत स्पाई-कॉमेडी फिल्म 'उड़ता तीर' आखिरकार बीते शुक्रवार, 23 अक्टूबर 2026 को देश-दुनिया के सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है।

फिल्म को दर्शकों और समीक्षकों की तरफ से बेहद मनोरंजक प्रतिक्रिया मिल रही है। धर्मा प्रोडक्शंस और सिख्या एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी इस फिल्म ने अपने पहले ही दिन बॉक्स ऑफिस पर करीब ₹4.10 करोड़ का शानदार कलेक्शन करके मजबूत शुरुआत की है।

आकाश कौशिक के निर्देशन में बनी यह फिल्म एक बेहद अनोखे और मजेदार कॉन्सेप्ट पर आधारित है। फिल्म में आयुष्मान खुराना ने एक ऐसे पाकिस्तानी जासूस का किरदार निभाया है, जो भारत में अपनी याददाश्त खो बैठता है और खुद को एक पक्का हिंदुस्तानी देशभक्त समझने लगता है।

राहुल बोस, राम कपूर और गुलशन ग्रोवर के शानदार अभिनय ने कॉमेडी और सस्पेंस के इस कॉकटेल को और मजेदार बना दिया है।

दिवाली 2027 में नहीं, अब 2028 में आएगी 'रामायण 2'

रणबीर कपूर, साई पल्लवी और साउथ सुपरस्टार यश स्टारर फिल्म 'रामायण' को लेकर फिल्म जगत से इस हफ्ते की सबसे बड़ी खबर सामने आई है।

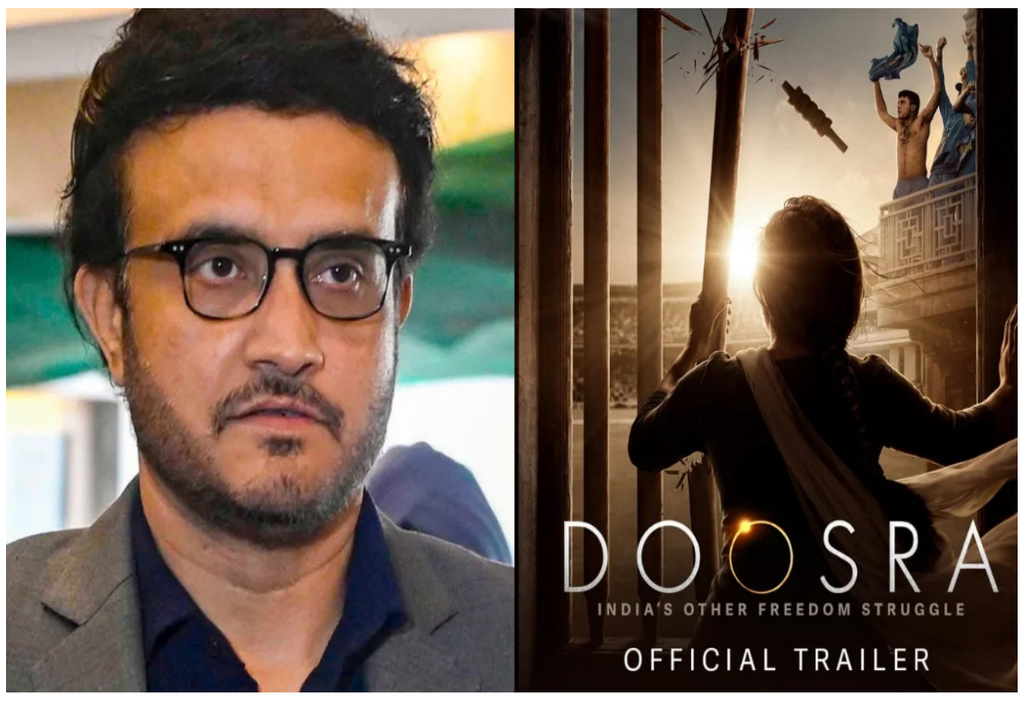
निर्देशक नितेश तिवारी और निर्माता नमित मल्होत्रा की इस महाबजट वाले सिनेमाई प्रोजेक्ट का इंतजार कर रहे फैंस के लिए एक चौंकाने वाला बदलाव हुआ है। इंडस्ट्री के बेहद विश्वसनीय सूत्रों के मुताबिक, इस मेगा-प्रोजेक्ट का पहला भाग 'रामायण: पार्ट 1' (Rise of a Legend) अपनी तय योजना के अनुसार इसी साल 5 नवंबर 2026 को दिवाली के मौके पर सिनेमाघरों में दस्तक देने जा रहा है।

हालांकि, मेकर्स ने इसके दूसरे भाग 'रामायण: पार्ट 2' की रिलीज को पूरे एक साल के लिए आगे बढ़ा दिया है, जो पहले दिवाली 2027 में आने वाली थी। अब यह दूसरी फिल्म सीधे दिवाली 2028 में रिलीज होगी।

इस देरी की मुख्य वजह फिल्म के वीएफएक्स, भारी-भरकम युद्ध दृश्यों की शूटिंग और पोस्ट-प्रोडक्शन काम में लगने वाला अतिरिक्त समय बताया जा रहा है। निर्माता भारतीय दर्शकों को एक ऐसा अभूतपूर्व और अंतरराष्ट्रीय स्तर का सिनेमाई अनुभव देना चाहते हैं जिसमें कोई जल्दबाजी न हो।

हालांकि फैंस थोड़े निराश जरूर हैं, लेकिन सिनेमा विशेषज्ञों का मानना है कि बेहतर क्वालिटी के लिए समय लेना फिल्म के हक में एक बेहतरीन फैसला साबित होगा।

'दूसरा' - अद्भुत संकल्पना, किंतु क्रिकेट के उत्साह तले दब गई महिला सशक्तिकरण की गूंज



मुंबई। अभिनय देव के निर्देशन में निर्मित सिनेमा 'दूसरा' की मूल संकल्पना निस्संदेह अत्यंत रोचक है। यह कथा एक साथ दो सर्वथा भिन्न धरातलों पर यात्रा करती है।

एक ओर इसमें पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान सौरव गांगुली की खेल यात्रा को एक यथार्थवादी वृत्तचित्र के रूप में पिरोया गया है, जिसमें पुरानी खेल स्पर्धाओं के वास्तविक दृश्यों के साथ-साथ हर्षा भोगले, शशि थरूर, राजदीप सरदेसाई और शेखर कपूर जैसी हस्तियों के साक्षात्कार सम्मिलित हैं।

वहीं दूसरी ओर, इसी के समानांतर 'तारा' नामक एक विद्रोही किशोरी की काल्पनिक कथा भी आकार लेती है।

पटकथा में भटकाव

इस सिनेमा की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जिस पटकथा के केंद्र में तारा के व्यक्तिगत संघर्ष को होना चाहिए था, वहां दर्शकों का संपूर्ण ध्यान सौरव गांगुली की ऐतिहासिक सफलताओं की ओर आकृष्ट हो जाता है।

महिला सशक्तिकरण और एक युवा लड़की का मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व रुपहले पर्दे पर उभर कर नहीं आ पाता और उसमें गहराई का नितांत अभाव खटकता है।

क्रिकेट के वे ऐतिहासिक क्षण पुरानी पीढ़ी की स्मृतियों को तो अवश्य ताजा करते हैं, किंतु युवा वर्ग के लिए यह जुड़ाव स्थापित करना थोड़ा कठिन प्रतीत होता है।

अभिनय और प्रस्तुति

अभिनय के दृष्टिकोण से देखा जाए, तो बाल कलाकार त्विशा जोशी ने तारा के विद्रोही और स्वतंत्र स्वभाव की एक अत्यंत ठोस नींव रखी है।

इसके पश्चात, युवा तारा के रूप में प्लबिता बोरठाकुर अपनी मासूमियत से इस चरित्र को आगे बढ़ाती हैं, यद्यपि राजस्थानी बोली के उच्चारण में उनकी असहजता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जो अखरती है।

पिता की भूमिका में अंकुर विकल ने अपने चरित्र के साथ पूर्ण न्याय किया है, जबकि अन्य सह-कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं हो सका।

निष्कर्ष

निष्कर्षत:, एक अत्यंत विचारोत्तेजक और अभिनव विषय होने के बावजूद, मुख्य कथावस्तु में गहराई के अभाव के कारण 'दूसरा' महज एक साधारण सिनेमा बनकर रह जाता है।

यह प्रस्तुति विशेष रूप से उन दर्शकों के लिए है, जो उस स्वर्णिम खेल युग के रोमांच और सौरव गांगुली के ऐतिहासिक क्षणों को सिनेमाई पर्दे पर पुन: जीना चाहते हैं।

अमेरिका तनाव के बीच कूटनीतिक समाधान की उम्मीद बरकरार



तेहरान/वॉशिंगटन: ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव के बावजूद कूटनीतिक समाधान की उम्मीद बनी हुई है। दोनों देशों के बीच बातचीत में गतिरोध के बीच ईरान ने संकेत दिया है कि मध्यस्थों के माध्यम से संपर्क जारी है। हालांकि, दोनों पक्षों के बीच मतभेद गहरे हैं और पश्चिम एशिया में सैन्य संघर्ष बढ़ने की आशंका बनी हुई है।

ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई के अनुसार, तेहरान ने कूटनीति का रास्ता बंद नहीं किया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका के साथ प्रत्यक्ष बातचीत में प्रगति नहीं होने के बावजूद मध्यस्थों के जरिए संदेशों का आदान-प्रदान जारी है। ईरान का कहना है कि किसी भी समझौते में उसकी संप्रभुता और राष्ट्रीय हितों का सम्मान किया जाना चाहिए।

दूसरी ओर, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 25 अक्टूबर को कहा कि उस दिन ईरान पर हमला नहीं किया जाएगा। हालांकि, इस बयान से दोनों देशों के बीच तनाव समाप्त होने के संकेत नहीं मिले हैं। परमाणु कार्यक्रम, क्षेत्रीय सुरक्षा और सैन्य गतिविधियों जैसे मुद्दों पर दोनों पक्षों के बीच मतभेद बने हुए हैं। इस बीच, इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने संभावित सुरक्षा खतरों को लेकर चिंता जताई है। इजरायल लंबे समय से ईरान की सैन्य गतिविधियों और उसके क्षेत्रीय सहयोगी संगठनों को अपने लिए खतरा मानता रहा है। ऐसे में ईरान और अमेरिका के बीच किसी भी नए टकराव का असर इजरायल तथा आसपास के देशों पर भी पड़ सकता है।

इस घटनाक्रम का प्रभाव वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ने की आशंका है। होर्मुज जलडमरूमध्य अंतरराष्ट्रीय तेल परिवहन का एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है। यहां सैन्य तनाव बढ़ने या जहाजों की आवाजाही बाधित होने से कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आ सकती है। इससे वैश्विक व्यापार, परिवहन और ऊर्जा आपूर्ति प्रभावित हो सकती है।

भारत के लिए भी यह स्थिति महत्वपूर्ण है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा करता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से देश के आयात बिल पर दबाव पड़ सकता है। इसके अलावा, परिवहन लागत और महँगाई में वृद्धि की आशंका भी पैदा हो सकती है।

विशेषज्ञों की दृष्टि से, मौजूदा संकट का स्थायी समाधान सैन्य दबाव के बजाय बातचीत, विश्वास बहाली और आपसी सहमति पर निर्भर करेगा। यदि दोनों देश किसी समझौते की दिशा में आगे बढ़ते हैं, तो इससे पश्चिम एशिया में स्थिरता बहाल करने में मदद मिल सकती है।

निष्कर्ष: ईरान और अमेरिका के बीच कूटनीतिक संपर्क जारी रहना सकारात्मक संकेत है, लेकिन क्षेत्र में स्थायी शांति के लिए दोनों पक्षों को अपने मतभेद दूर करने होंगे। आने वाले दिनों में उनके फैसले न केवल पश्चिम एशिया की सुरक्षा, बल्कि वैश्विक ऊर्जा बाजार और भारत की अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित कर सकते हैं।

रूस-यूक्रेन महायुद्ध: शांति की ओर बढ़ते कदम, अमेरिकी दूत और पुतिन की अहम बैठक



नई दिल्ली । **युद्धविराम की सुगबुगाहट:** कूटनीतिक वार्ता में वास्तविक प्रगति, तकनीकी स्तर पर चर्चा शुरू

रूस और यूक्रेन के मध्य लंबे समय से जारी भीषण युद्ध के समाधान की दिशा में इस सप्ताह एक अत्यंत सकारात्मक और निर्णायक पहल देखने को मिली है। अमेरिकी राष्ट्रपति के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ ने रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से महत्वपूर्ण कूटनीतिक भेंट की। इस उच्च स्तरीय वार्ता के पश्चात यह स्पष्ट संकेत मिले हैं कि दोनों देश अब एक स्थायी शांति समझौते की रूपरेखा तैयार करने हेतु अपने तकनीकी दलों को आगे बढ़ाने पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं। इस संपूर्ण कूटनीतिक घटनाक्रम पर फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब ने भी अपनी मुहर लगाते हुए इस वार्ता में वास्तविक प्रगति होने की पुष्टि की है। विश्व समुदाय इस कूटनीतिक पहल को एक बड़ी उम्मीद की किरण के रूप में देख रहा है, जिससे भविष्य में इस विनाशकारी संघर्ष के पूर्ण विराम की संभावना प्रबल हो गई है।

शांति की राह: रूस-यूक्रेन वार्ता के 7 अहम बिंदु

विषय	विवरण
प्रमुख घटनाक्रम	रूस-यूक्रेन युद्ध के समाधान के लिए कूटनीतिक प्रयास तेज।
प्रमुख बैठक	अमेरिकी विशेष दूत स्टीव विटकॉफ और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच मुलाकात।
बैठक का स्थान	सेंट पीटर्सबर्ग, रूस।
चर्चा का केंद्र	संभावित युद्धविराम और स्थायी शांति समझौते की दिशा में प्रयास।
अगला कदम	तकनीकी स्तर पर वार्ता आगे बढ़ाने की संभावना।
अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया	फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब ने वार्ता में प्रगति की बात कही।
वर्तमान स्थिति	कूटनीतिक पहल जारी; ठोस समझौते या युद्धविराम की पुष्टि आवश्यक।

जलवायु न्याय की ऐतिहासिक जीत: विनाशकारी बाढ़ के बाद नेपाल को मिला संयुक्त राष्ट्र का सहायता कोष



नई दिल्ली । निर्धन राष्ट्रों के लिए संजीवनी: प्राकृतिक आपदा से जूझ रहे नेपाल को 'हानि एवं क्षति कोष' से भुगतान प्राकृतिक आपदाओं और वैश्विक तापवृद्धि के विनाशकारी दुष्प्रभावों से जूझ रहे विकासशील राष्ट्रों को एक बड़ी वित्तीय सफलता प्राप्त हुई है।

हाल ही में आई प्रलयंकारी बाढ़ की विभीषिका झेलने के बाद, नेपाल को संयुक्त राष्ट्र के ऐतिहासिक 'हानि एवं क्षति कोष' से प्रथम भुगतान के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान करने की आधिकारिक स्वीकृति मिली है।

यह वैश्विक कोष विशेष रूप से विकसित और संपन्न राष्ट्रों द्वारा उन निर्धन देशों के आर्थिक पुनर्वास हेतु स्थापित किया गया है, जो जलवायु परिवर्तन का सर्वाधिक दंश झेलते हैं।

नेपाल का इस अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सहायता का पहला लाभार्थी बनना, वैश्विक पर्यावरण नीति और जलवायु न्याय की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक सफलता मानी जा रही है।

व्यापार:-व्यवसाय:

वोक्सवैगन ने भारत में इलेक्ट्रिक कारों के निवेश पर लगाई रोक, JSW समूह के साथ साझेदारी पर टिकी नजर



● मयंक आनंद

नई दिल्ली। जर्मनी की प्रमुख वाहन निर्माता कंपनी वोक्सवैगन ने भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) से जुड़ी अपनी विस्तार योजना के लिए नए निवेश फिलहाल रोक दिए हैं।

कंपनी संभावित भारतीय साझेदार सज्जन जिंदल के नेतृत्व वाले JSW समूह के साथ प्रस्तावित साझेदारी को लेकर स्पष्टता का इंतजार कर रही है। 24 अक्टूबर को सामने आई रिपोर्ट के मुताबिक, कंपनी ने इलेक्ट्रिक कार परियोजना के शुरुआती डिजाइन संबंधी काम पूरे कर लिए हैं, लेकिन अतिरिक्त पूंजी लगाने से पहले वह ठोस कारोबारी योजना चाहती है।

यह फैसला ऐसे समय आया है, जब भारत में इलेक्ट्रिक कारों की मांग बढ़ रही है और घरेलू तथा विदेशी कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा तेज हो रही है। सितंबर में भारत में इलेक्ट्रिक यात्री वाहनों की बिक्री सालाना आधार पर लगभग दोगुनी होकर 35,000 से अधिक इकाइयों तक पहुंच गई।

इसके बावजूद वोक्सवैगन को भारतीय बाजार में किफायती इलेक्ट्रिक कारों के साथ अपनी मजबूत मौजूदगी बनाने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

वोक्सवैगन भारत में इलेक्ट्रिक वाहन विकसित करने के लिए चीन में तैयार किए गए कम लागत वाले इलेक्ट्रिक वाहन प्लेटफॉर्म के एक संस्करण पर विचार कर रही है। हालांकि, भारतीय बाजार में प्रतिस्पर्धी कीमत हासिल करने के लिए कंपनी को स्थानीय स्तर पर कलपुर्जों की खरीद और घरेलू विनिर्माण पर जोर देना होगा। इससे उत्पादन लागत कम करने में मदद मिल सकती है।

वोक्सवैगन और JSW समूह ने सितंबर में भारत तथा निर्यात बाजारों के लिए यात्री वाहनों के विकास, निर्माण और बिक्री को लेकर संभावित साझेदारी तलाशने की घोषणा की थी। प्रस्तावित सहयोग में पेट्रोल-डीजल, इलेक्ट्रिक, प्लग-इन हाइब्रिड और हाइब्रिड वाहन शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इस साझेदारी की अंतिम शर्तों और निवेश योजना पर अभी स्पष्टता नहीं है।

कंपनी का यह कदम उसकी वैश्विक लागत-कटौती रणनीति से भी जुड़ा है। यूरोप में कमजोर मांग और चीनी वाहन निर्माताओं से बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच वोक्सवैगन अपने निवेश में लगभग 15 प्रतिशत तक कटौती करने की योजना पर काम कर रही है।

भारत में अतिरिक्त निवेश रोकने से उसकी इलेक्ट्रिक वाहन पेशकश आने में देरी हो सकती है। भारतीय बाजार में वोक्सवैगन के सामने टाटा मोटर्स, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एमजी, विनफास्ट और बीवाईडी जैसी कंपनियों की चुनौती है।

ऐसे में JSW के साथ संभावित साझेदारी कंपनी के लिए लागत साझा करने और बाजार में अपनी स्थिति मजबूत करने का रास्ता बन सकती है। फिलहाल, आगे की योजना साझेदारी की शर्तों और व्यावसायिक व्यवहार्यता पर निर्भर करेगी।

जियो आईपीओ के लिए 77 अरब डॉलर से ज़्यादा की बोलियाँ, भारत का सबसे ज़्यादा सब्सक्राइब हुआ शेयर इश्यू

● कार्तिका गोथवाल



नई दिल्ली । अरबपति मुकेश अंबानी के 20 साल में पहले आईपीओ के लिए शुक्रवार को 77 अरब डॉलर से ज़्यादा की बोलियाँ लगीं। इसके साथ ही जियो प्लेटफॉर्म्स (JIOP.NS) भारत का सबसे ज़्यादा सब्सक्राइब हुआ शेयर इश्यू बन गया। उसने 2008 में आए रिलायंस पावर के इश्यू को पीछे छोड़ दिया, जो मुकेश अंबानी के भाई अनिल अंबानी के समूह की कंपनी है।

अंबानी की दूरसंचार और डिजिटल कंपनी का यह आईपीओ बड़ी लिस्टिंग के प्रति निवेशकों की रुचि की परीक्षा माना जा रहा है। कंपनी ने इसे हिंदू त्योहारी सीज़न में उतारा है, जिसे शुभ माना जाता है, हालाँकि भारतीय बाज़ार पिछले कुछ हफ़्तों से सुस्त बने हुए हैं।

आईपीओ में जियो प्लेटफॉर्म्स का मूल्यांकन 108.3 अरब डॉलर तक आँका गया है। बुधवार (28 अक्टूबर) को ट्रेडिंग शुरू होने पर यह बाज़ार पूंजीकरण के लिहाज़ से भारत की सबसे बड़ी कंपनियों में शामिल हो सकती है। सफल लिस्टिंग के बाद यह देश की शीर्ष चार सूचीबद्ध कंपनियों में आ जाएगी, जिनमें इससे ऊपर मूल कंपनी रिलायंस, भारती एयरटेल और एचडीएफसी बैंक होंगे।

आईपीओ में पेश शेयरों के मुकाबले सार्वजनिक सब्सक्रिप्शन 22 गुना से ज़्यादा रहा। संस्थागत और खुदरा निवेशकों, कर्मचारियों और शेयरधारकों, सभी की ओर से मज़बूत माँग देखी गई। अगर ज़्यादातर बोलियाँ 1,119 रुपये (11.79 डॉलर) के ऊपरी प्राइस बैंड के आसपास लगी हैं, तो माँग 51.5 अरब डॉलर से ऊपर रही होगी।

यह उन एंकर निवेशकों की बोलियों के अलावा है, जिनमें अबू धाबी इन्वेस्टमेंट अथॉरिटी, ब्लैकरॉक और फिडेलिटी शामिल हैं। इन्होंने अपने लिए रखे गए 85.4 करोड़ डॉलर के शेयरों के लिए कुल 25.6 अरब डॉलर की बोलियाँ लगाई थीं।

कंपनी 27 करोड़ नए शेयर 1,065 से 1,119 रुपये प्रति शेयर के दायरे में बेच रही है। ऊपरी स्तर पर इश्यू से करीब 3.2 अरब डॉलर जुटेंगे, जो 2024 में हुंडई मोटर इंडिया के 2.9 अरब डॉलर के पिछले राष्ट्रीय रिकॉर्ड से ज़्यादा है।

दीर्घकालिक संपत्ति निर्माता

रिलायंस के एक अधिकारी ने रॉयटर्स को बताया कि आईपीओ को 1.38 करोड़ से ज़्यादा आवेदन मिले हैं, जो भारत में अब तक का सबसे बड़ा आँकड़ा है। तुलना के लिए, चीन की मेमोरी चिप कंपनी सीएक्सएमटी के 8.6 अरब डॉलर के आईपीओ को, जो इस साल एशिया का सबसे बड़ा आईपीओ है, करीब 94 लाख खाताधारकों से आवेदन मिले थे।

वेल्थमिल्स सिक्योरिटीज़ के इक्विटी स्ट्रैटेजिस्ट क्रांति बथिनी ने कहा कि लंबे समय बाद आए रिलायंस के आईपीओ को लेकर शेयर में काफ़ी उत्साह और उमंग का माहौल है।

रिलायंस इंडस्ट्रीज़ को भारतीय निवेशक अक्सर लंबे समय में संपत्ति बनाने वाली कंपनी मानते हैं। एलएसईजी के आँकड़ों के मुताबिक़ 2006 से अब तक इसके शेयरों ने करीब 900% रिटर्न दिया है, जबकि बेंचमार्क निफ्टी का रिटर्न 685% रहा।

रिलायंस की स्थापना धीरूभाई अंबानी ने की थी, जिन्होंने 1980 के दशक में मुंबई की बड़ी शेयरधारक सभाओं के ज़रिये खुदरा निवेशकों का विशाल आधार तैयार किया। समूह की वेबसाइट के अनुसार 1977 की उसकी लिस्टिंग ने भारत में "इक्विटी संस्कृति" की शुरुआत की।

निवेशकों की भारी दिलचस्पी

शुक्रवार को बंद होने तक आईपीओ का संस्थागत हिस्सा 70.55 गुना सब्सक्राइब हुआ, जो बड़े निवेशकों की ज़बरदस्त माँग दिखाता है। खुदरा हिस्सा 2.7 गुना भरा। कर्मचारियों की बोलियाँ पेश शेयरों की 2.93 गुना और रिलायंस के मौजूदा शेयरधारकों की 7.6 गुना रहीं।

आईपीओ बुधवार को खुलने के दो घंटे के भीतर पूरी तरह सब्सक्राइब हो गया था। यह ज़्यादातर भारतीय आईपीओ से अलग है, जिनमें बुक धीरे-धीरे भरती है और संस्थागत निवेशक अक्सर आख़िरी घंटों में बोली लगाते हैं। मिसाल के तौर पर, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का हालिया आईपीओ पहले दिन सिर्फ़ 42% और हुंडई मोटर इंडिया का केवल 18% सब्सक्राइब हुआ था।

कंपनी का कारोबार

2016 में शुरू हुए जियो के दूरसंचार कारोबार ने मुफ़्त वॉइस कॉल और सस्ते डेटा के दम पर बाज़ार में उथल-पुथल मचा दी और भारती एयरटेल व वोडाफोन आइडिया को झटका दिया। एक ही देश में ग्राहकों की संख्या के लिहाज़ से यह अब चाइना मोबाइल के बाद दूसरे नंबर पर है।

मार्च में समाप्त वित्त वर्ष में जियो प्लेटफॉर्म्स ने 15.5 अरब डॉलर के राजस्व पर करीब 3.2 अरब डॉलर का मुनाफ़ा कमाया, जिसमें लगभग 90% हिस्सा दूरसंचार कारोबार का था।

मेटा प्लेटफॉर्म्स और अल्फाबेट की गूगल कंपनी के सबसे पुराने निवेशकों में हैं। जियो ने 2020 में मेटा और अल्फाबेट जैसे निवेशकों से 20 अरब डॉलर से ज़्यादा जुटाए थे।

कंपनी शुद्ध आय में से 275 अरब रुपये (करीब 2.90 अरब डॉलर) तक अपनी दूरसंचार सहायक कंपनी रिलायंस जियो इन्फोकॉम के क़र्ज़ चुकाने या समय से पहले लौटाने में लगाएगी। बाकी रकम पूँजीगत खर्च समेत सामान्य कॉर्पोरेट ज़रूरतों के लिए होगी।

मोतीलाल ओसवाल के विश्लेषकों के मुताबिक़ जियो के 53.3 करोड़ ग्राहक भविष्य की वृद्धि की मज़बूत नींव हैं, लेकिन कंपनी को अभी यह साबित करना है कि वह नई डिजिटल सेवाओं से बड़े पैमाने पर कमाई कर सकती है।

लंबे इंतज़ार के बाद लिस्टिंग

यह 2006 के बाद रिलायंस समूह का पहला आईपीओ है। अंबानी ने 2019 में पाँच साल के भीतर लिस्टिंग का वादा किया था, लेकिन 2025 में योजना टल गई। मार्च में दाखिल होने वाली फाइलिंग भी ईरान युद्ध से आईपीओ बाज़ार की माँग कमज़ोर पड़ने के कारण आगे खिसका दी गई थी।

संघर्ष, साधना और संकल्प से सफलता के शिखर तक पहुंचीं तहसीलदार

● रवि शुक्ला

सीधी, देश दर्पण संवाद। जीवन की राह में आने वाली कठिनाइयां जब हौसलों की परीक्षा लेती हैं, तब कुछ लोग परिस्थितियों के आगे घुटने टेक देते हैं, जबकि कुछ अपने संकल्प की शक्ति से उन्हीं कठिनाइयों को सफलता की सीढ़ी बना लेते हैं। तहसीलदार वेदवती सिंह की जीवन यात्रा ऐसी ही संघर्ष, धैर्य और आत्मविश्वास की प्रेरक गाथा है।

छात्रावास में रहकर शिक्षा प्राप्त करने से लेकर मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की कठिन प्रतियोगी परीक्षा में सफलता हासिल करने और प्रशासनिक सेवा में अपनी पहचान स्थापित करने तक का उनका सफर उन बेटियों के लिए उम्मीद की किरण है, जो सीमित संसाधनों के बीच बड़े सपने संजोती हैं।

मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले की जैतहरी तहसील के एक साधारण परिवार में जन्मीं वेदवती सिंह ने अपनी मेहनत, लगन और दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर वह मुकाम हासिल किया, जिसके लिए वर्षों तक संघर्ष करना पड़ा।

आदिवासी बाहुल्य और छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे क्षेत्र से निकलकर प्रशासनिक अधिकारी बनने तक की उनकी यात्रा इस विश्वास को मजबूत करती है कि सफलता का रास्ता सुविधाओं से नहीं, बल्कि संकल्प और निरंतर परिश्रम से प्रशस्त होता है। वर्तमान में वे सीधी जिले के मड़वास में तहसीलदार के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं।

साधारण परिवार में जन्म, आसमान छूने का सपना

वेदवती सिंह के पिता कोयला खदान में चतुर्थ श्रेणी में नौकरी करते हैं, जबकि उनकी माता गृहिणी हैं। साधारण पारिवारिक परिवेश में पली-बढ़ीं वेदवती ने बचपन से ही शिक्षा को अपने जीवन का आधार बनाया। प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर तक की पढ़ाई उन्होंने परिवार के साथ रहते हुए पूरी की। इसके बाद आगे की शिक्षा के लिए उन्हें घर-परिवार से दूर शहडोल जिले के शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रावास में रहना पड़ा।

परिवार से दूर रहकर पढ़ाई करना, अपनी दिनचर्या स्वयं संभालना और भविष्य के प्रति सजग रहना आसान नहीं था।

फिर भी उन्होंने परिस्थितियों को अपनी प्रगति में बाधा नहीं बनने दिया। छात्रावास का अनुशासित जीवन और शिक्षा के प्रति उनकी निष्ठा आगे चलकर उनके व्यक्तित्व की मजबूत नींव बने।

इसके बाद उन्होंने बुढ़ार कॉलेज से स्नातक एवं स्नातकोत्तर की शिक्षा पूरी की। पढ़ाई के इसी सफर में उनके मन में प्रशासनिक सेवा में पहुंचकर समाज और शासन के बीच अपनी जिम्मेदारी निभाने का संकल्प और प्रबल होता गया।

एमपीपीएससी को बनाया जीवन का लक्ष्य

उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद वेदवती सिंह ने मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) की परीक्षा को अपना लक्ष्य बनाया। वर्ष 2013 से 2016 के बीच उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में पूरी तन्मयता से समय लगाया।

सीमित संसाधनों के बीच अध्ययन, आत्मानुशासन और निरंतर अभ्यास के सहारे वह अपने सपने को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ती रहीं।

इसी दौरान उन्हें महिला एवं बाल विकास विभाग में पर्यवेक्षक (सुपरवाइजर) के पद पर नौकरी मिली। उन्होंने वर्ष 2017 से 2018 तक इस पद पर कार्य किया। नौकरी मिलने के बाद भी उनके भीतर प्रशासनिक सेवा में उच्च पद हासिल करने की आकांक्षा कम नहीं हुई।

उन्होंने अपने लक्ष्य को अधूरा छोड़ने के बजाय तैयारी जारी रखने का निर्णय लिया। यह उनके व्यक्तित्व की वही विशेषता थी, जिसने आगे चलकर उन्हें सफलता के मुकाम तक पहुंचाया।

असफलताओं ने परखा हौसला, लेकिन तोड़ नहीं सकीं संकल्प

प्रतियोगी परीक्षाओं का सफर अक्सर धैर्य और आत्मविश्वास की कठिन परीक्षा लेता है। वेदवती सिंह के लिए भी यह राह आसान नहीं रही।

घर पर रहकर तैयारी की, वर्ष 2014 से 2016 के बीच उन्होंने एमपीपीएससी की प्रारंभिक और मुख्य परीक्षाओं में भाग लिया, लेकिन उन्हें अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी।

मुख्य परीक्षा में सफलता नहीं मिलने के कारण वह साक्षात्कार तक नहीं पहुंच पाईं। लगातार प्रयासों के बावजूद परिणाम पक्ष में न आने पर निराशा स्वाभाविक थी, लेकिन उन्होंने असफलता को अपनी नियति मानने से इनकार कर दिया।

उन्होंने अपनी कमियों को समझा, तैयारी की रणनीति में सुधार किया और नए उत्साह के साथ लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाए।

वेदवती सिंह ने मुख्य परीक्षा की बेहतर तैयारी के लिए जबलपुर का रुख किया। वर्ष 2017 में उन्होंने मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण कर पहली बार साक्षात्कार तक पहुंचने में सफलता हासिल की।

हालांकि, पहले साक्षात्कार में उन्हें सफलता नहीं मिली। इसके बावजूद उनका आत्मविश्वास डगमगाया नहीं। उन्होंने पुन: प्रयास किया और वर्ष 2018 में साक्षात्कार में शामिल हुईं। अंतत: उनके वर्षों के परिश्रम और धैर्य का प्रतिफल मिला तथा प्रशासनिक सेवा में चयन का सपना साकार हुआ।

उनकी यह यात्रा बताती है कि असफलता किसी मंजिल का अंत नहीं होती, बल्कि स्वयं को और बेहतर बनाने का अवसर होती है। जो व्यक्ति अपनी कमियों से सीखकर लगातार आगे बढ़ता है, उसके लिए सफलता की संभावनाएं बनी रहती हैं।

आखिरकार वर्ष 2019 में उन्हें नायब तहसीलदार के पद पर पहली नियुक्ति मिली। यह उपलब्धि केवल एक सरकारी पद प्राप्त करने तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन तमाम संघर्षों, त्याग और प्रयासों की परिणति थी, जिन्हें उन्होंने वर्षों तक अपने जीवन का हिस्सा बनाए रखा।

नायब तहसीलदार के रूप में विभिन्न तहसीलों में सेवाएं देते हुए उन्होंने प्रशासनिक कार्यों का अनुभव अर्जित किया और अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन में आगे बढ़ती रहीं।

पारिवारिक जीवन के साथ प्रशासनिक दायित्वों का संतुलन

वेदवती सिंह का विवाह शहडोल जिले के जयसिंहनगर क्षेत्र के गोहपारू निवासी पवन सिंह के साथ हुआ।

विवाह के समय पवन सिंह पुलिस विभाग में सब-इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे। वर्तमान में वह थाना प्रभारी के रूप में अपनी जिम्मेदारियां निभा रहे हैं।

वहीं, वेदवती सिंह ने भी प्रशासनिक सेवा में अपनी यात्रा को निरंतर आगे बढ़ाया और अब सीधी जिले के मड़वास में तहसीलदार के पद पर पदस्थ हैं। दोनों अपने-अपने विभागों में महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं।

यह उनके व्यक्तिगत परिश्रम, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

बेटियों के सपनों को पंख देती है वेदवती सिंह की कहानी

वेदवती सिंह की सफलता की कहानी केवल एक महिला अधिकारी की व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि उन तमाम बेटियों के लिए प्रेरणा है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने भविष्य को संवारने का सपना देखती हैं।

उनकी यात्रा यह संदेश देती है कि जीवन में परिस्थितियां चाहे कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों, यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और प्रयासों में निरंतरता बनी रहे, तो सफलता की राह निकाली जा सकती है,असफलताओं से घबराने के बजाय उनसे सीखना, अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना और लक्ष्य के प्रति समर्पित रहना ही उनकी उपलब्धि का मूल मंत्र रहा है।

आज मड़वास में तहसीलदार के रूप में जिम्मेदारी निभा रहीं वेदवती सिंह उन परिवारों के लिए भी प्रेरणास्रोत हैं, जो अपनी बेटियों को शिक्षित, आत्मनिर्भर और सफल देखना चाहते हैं। उनकी जीवनगाथा इस विश्वास को और दृढ़ करती है कि सपनों की ऊंचाई परिस्थितियों से नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए किए गए संघर्ष और संकल्प से तय होती है।



विविध संवाद:

डिजिटल क्रांति का महामंच बना LNCT, 'इन्फ्लुएंसर अवॉर्ड्स 2026' में हुनर का हुआ सम्मान



● प्रकाश त्रिपाठी

भोपाल, देश दर्पण संवाद:

राजधानी के एलएनसीटी (लक्ष्मी नारायण कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी) रायसेन रोड कैंपस में रविवार शाम डिजिटल दुनिया की चमक ज़मीनी हकीकत में तब्दील हो गई। अवसर था मध्य भारत के सबसे बड़े क्रिएटर कार्निवल 'इन्फ्लुएंसर अवॉर्ड्स 2026' (आईएफए - तीसरे संस्करण) का। इस भव्य समारोह में डिजिटल संस्कृति, इनोवेशन और प्रभावशीलता का अनूठा संगम देखने को मिला। **फॉलोअर्स नहीं, कंटेंट की मौलिकता रही कसौटी**

इस वर्ष आयोजन की मूल थीम महज़ फॉलोअर्स की संख्या के बजाय 'कंटेंट की मौलिकता और सामाजिक जुड़ाव' पर केंद्रित रही। डिजिटल युग में समाज की सोच को दिशा देने वाले रचनाकारों को उनकी प्रतिभा के आधार पर विभिन्न प्रमुख श्रेणियों में सम्मानित किया गया।

विभिन्न श्रेणियों में इन्होंने मारी बाज़ी:

बेस्ट क्रिएटिव कंटेंट ऑफ द ईयर: अपनी अद्भुत रचनात्मकता के लिए अंशिता गुप्ता ने यह प्रतिष्ठित सम्मान अपने नाम किया।

इस श्रेणी में एक्टर साजिद, ट्रैवल व्लॉगर अभिस्वेंडर्स, द भूपेंद्र शर्मा और रोशन केवट के बीच भी कड़ा मुकाबला देखा गया।

मोस्ट वायरल फेस ऑफ द ईयर:

सोशल मीडिया पर अपनी ज़बरदस्त उपस्थिति और लोकप्रियता के चलते यह शानदार खिताब मधुलिका वाजपेयी को मिला।

बेस्ट वॉइसओवर आर्टिस्ट:

आवाज़ के जादू और बेहतरीन संवाद अदायगी के लिए पत्रकार प्रिंस गाबा को सर्वश्रेष्ठ वॉइसओवर आर्टिस्ट चुना गया।

बेस्ट मोटिवेशनल स्पीकर: अपने ऊर्जावान विचारों से युवाओं को दिशा देने वाले प्रभात पोद्दार इस श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ चुने गए।

बेस्ट मीडिया न्यूज़ पेज:

डिजिटल प्लेटफॉर्म भोपाल फॉर यू पर सटीक और विश्वसनीय खबरों के लिए सुमित राय को सम्मानित किया गया।

बेस्ट फैशन इन्फ्लुएंसर (फीमेल): स्टाइल स्टेटमेंट और कंटेम्परेरी ट्रेंड्स को नई परिभाषा देने के लिए जस्मिन ठाकुर तथा अनुष्का चौरसिया आकर्षण का केंद्र रहीं।

एंटरटेनिंग इन्फ्लुएंसर: हास्य और सामाजिक व्यंग्य के जरिए दर्शकों को जोड़ने के लिए राहुल यादव, महेश कुमार नांगले और 'भोपाली बैंटर' ने जमकर तालियां बटोरीं।

बेस्ट एंकर (मेल/फीमेल):

सटीक वाकपटुता के लिए महिला वर्ग में पल्लवी रेया, स्वाति पेसवानी व आरजे जानवी, जबकि पुरुष वर्ग में अर्पित साहू और अमन मिश्रा (माइक का लाल) ने शीर्ष स्तर पर जगह बनाई।

राइजिंग स्टार एवं विजुअल आर्ट्स:

डिजिटल व्लॉगिंग में अपनी छाप छोड़ते 'व्लॉगर शिवा' को राइजिंग स्टार और लेंस के जादूगर 'रोहित फोटोग्राफी' को बेस्ट फोटोग्राफर का सम्मान प्राप्त हुआ।

विज़न और कॉरपोरेट समर्थन का दिखा तालमेल इस स्तर के महाआयोजन को साकार करने में शैक्षणिक और कॉरपोरेट साझेदारी की भूमिका निर्णायक रही।

इवेंट के कुशल प्रबंधन की ज़िम्मेदारी 'सीएम इंडिया' (CEM India) ने निभाई। वहीं, 'ब्रांडक्यूब इंडिया' (Brandqube India) बतौर पावर्ड-बाय पार्टनर और 'टीवीएस' (TVS) सह-प्रायोजक रहे। इस सफल आयोजन ने यह साबित कर दिया कि सही विज़न के साथ स्थानीय प्रतिभाओं को राष्ट्रीय पटल पर चमकने के लिए महानगरों का मुंह नहीं ताकना पड़ता।

आस्था का महाकुंभ: लाल परेड मैदान में होगा भव्य 'कोटि अर्चन'







भोपाल, देश दर्पण संवाद : मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में शरद पूर्णिमा के पावन अवसर पर एक अभूतपूर्व और अलौकिक धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन होने जा रहा है। सोमवार को ऐतिहासिक लाल परेड मैदान में परम पूज्य सद्गुरु देव भगवान रावतपुरा सरकार के मंगल सानिध्य में 'श्री राजराजेश्वरी कोटि हरिद्रा कुमकुम अर्चन' (एक करोड़ अर्चन) का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस विशाल आयोजन के लिए मैदान में भव्य मंच तैयार कर लिया गया है।

श्रद्धालुओं के लिए संपूर्ण सामग्री नि:शुल्क

इस विशाल अनुष्ठान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें शामिल होने वाले श्रद्धालुओं को अपने साथ घर से पूजा का एक दाना भी नहीं लाना होगा। आयोजकों द्वारा सभी भक्तों के लिए पूजा की संपूर्ण सामग्री पूरी तरह से मुफ्त उपलब्ध कराई जा रही है।

कार्यक्रम की शुरुआत अर्चन से होगी और शाम 7 बजे से महा-हवन किया जाएगा। अनुष्ठान का पूर्ण लाभ लेने के लिए सभी श्रद्धालुओं को शाम 5:50 बजे से पूर्व कार्यक्रम स्थल पर पहुँचना अनिवार्य होगा।

देश-विदेश से मंगवाई गई 238 प्रकार की सामग्रियां

माँ राजराजेश्वरी की आराधना के लिए आयोजित इस महा-अनुष्ठान में कुल 238 प्रकार की सामग्रियों का उपयोग किया जाएगा, जिन्हें देश के विभिन्न राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल से विशेष तौर पर मंगवाया गया है:

अध्यात्म और समृद्धि का प्रतीक: अनुष्ठान के लिए नेपाल से 31 क्विंटल रुद्राक्ष मंगवाए गए हैं, जो वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा और अध्यात्म का प्रसार करेंगे। माँ लक्ष्मी की कृपा और समृद्धि के प्रतीक के रूप में केरल से 1100 चांदी के सिक्के मंगाए गए हैं।

पवित्रता और सुहाग: देवास से 100 क्विंटल पिसी हुई हल्दी और कोल्हापुर से 11 क्विंटल रोली-कुमकुम मंगाया गया है। देवी स्वरूपा अर्चन में अर्पित करने के लिए सूरत से 11,000 प्रसिद्ध साड़ियां भी मंगवाई गई हैं।

फल, पुष्प और अन्य विशेष सामग्रियां: इस आयोजन में उड़ीसा से 31,000 साबुत नारियल, भुसावल से 21 टन केले, जम्मू से 10 क्विंटल सेब, और भोपाल से 11 क्विंटल अनार का उपयोग होगा। टीकमगढ़ से 11,000 कमल के फूल, इंदौर व खंडवा से 50 क्विंटल विभिन्न पुष्प, तथा पन्ना से 11 लाख बिल्व पत्र मंगाए गए हैं।

इसके अतिरिक्त, कोलकाता से 21,000 साबुत पान के पत्ते, रायपुर (छत्तीसगढ़) से 21 क्विंटल अक्षत (साबुत चावल), बनारस से 5,100 नग मोती दाना, और नरसिंहपुर से 21 क्विंटल गुड़ व 11,000 नग हरे गन्ने अनुष्ठान का हिस्सा बनेंगे।

भोग और दीपदान: महाभोग के लिए आगरा से 11 क्विंटल सूखा पेड़ा मंगवाया गया है, जबकि सवा लाख बूंदी के लड्डू भोपाल में ही तैयार किए जा रहे हैं।

इंदौर से 5 क्विंटल साबुत पंचमेवा और 11 क्विंटल बताशा मंगाया गया है। दीपदान और पूजन के लिए झाँसी से 1 लाख कलश, दीपक और मलिया मंगवाए गए हैं।

आयोजकों के अनुसार, इन सबके अलावा विभिन्न प्रकार के मिष्ठान, औषधियों, हरी सब्जियों और छप्पन भोग के माध्यम से माँ राजराजेश्वरी का यह अर्चन संपन्न कराया जाएगा। यह आयोजन अपनी भव्यता और देश भर से जुटाई गई पूजन सामग्री के कारण पूरे प्रदेश में चर्चा का विषय बना

देश दर्पण संवाद | साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र | पंजीयन संख्या : MPHIN/26/A6588 प्रकाशक : असीत पाठक, 25, गोयल ग्रीन कॉलोनी, निपानिया, पोस्ट ऑफिस–विजय नगर, इंदौर, मध्य प्रदेश–452010 की ओर से स्वामी असीत पाठक के द्वारा प्रकाशित । किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा।
संपादक : असीत पाठक । मुद्रक : पूनम विश्वकर्मा, विश्वकर्मा प्रिंटिंग प्रेस, H. No. 51/1, Village–Padri, Post Office–Gondwali, Block & Tehsil–Waidhan, Singrauli, Madhya Pradesh–486892 से मुद्रित । प्रकाशन स्थल : इंदौर, मध्य प्रदेश।